ऋषि प्रसाद
हिन्दी
मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक
१ जुलाई २०१३
वर्ष : २३ अंक : १
(निरंतर अंक : २४७)
गुरुपूर्णिमा विशेषांक
भगवत्पाद साँईं
श्री लीलाशाहजी महाराज
पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू
आत्ममहिमा में
जगानेवाला पर्व
गुरुपूनम
(पृष्ठ ४)
आज के दिन तो गुरुदेव की नजर भर मिल जाय इतना ही काफी है । वास्तव में
तो हम गुरुपूर्णिमा नहीं मनाते, गुरुपूर्णिमा हमें मनाती है कि 'हे जीव ! तू अपने शिवस्वरूप में जाग
जा । गुरु-तत्त्व को अपने हृदय में ही आत्मसात् कर ले । जन्म-मरण के जंजाली चक्र से पार हो जा ।'

अलौकिक सामर्थ्य के धनी सद्गुरु

- पूज्य बापूजी

गुरु वसिष्ठजी महाराज के श्रीचरणों में भगवान श्रीराम
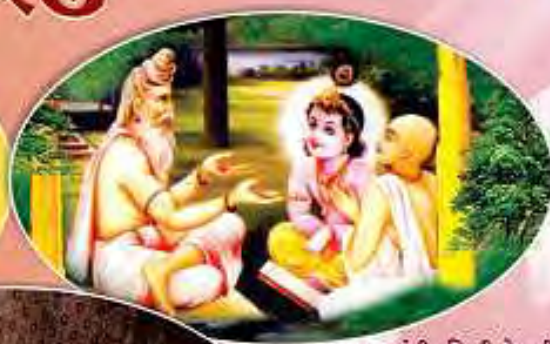
गुरु सांदीपनिजी के श्रीचरणों में भगवान श्रीकृष्ण व सुदामाजी

सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी के श्रीचरणों में पूज्य बापूजी

आद्य शंकराचार्यजी के श्रीचरणों में उनके शिष्य

मुनि शुकदेवजी के श्रीचरणों में राजा परीक्षित

इस संसार में जिसका कोई सद्गुरु नहीं है, उसका कोई सच्चा हितैषी भी नहीं है। सब होते हुए भी वह अनाथ है। शिष्य का वास्तविक कल्याण किसमें है इसका पता केवल सद्गुरु को ही होता है। यही कारण था कि प्राचीनकाल में कई चक्रवर्ती राजा राजपाट छोड़कर गुरु की शरण खोजते थे। गुरु के द्वार पर झाड़ू लगाते थे, गुरु के लिए लकड़ियाँ बीनते थे। जितने भी महान पुरुष हो गये, उनके जीवन में सद्गुरु का स्थान अवश्य था। भगवान श्रीराम के गुरु वसिष्ठजी महाराज थे तो भगवान श्रीकृष्ण के गुरु थे सांदीपनि ऋषि। संत ज्ञानेश्वर महाराज के गुरु निवृत्तिनाथ थे तो स्वामी विवेकानंद के गुरु थे श्री रामकृष्ण। राजा जनक के गुरु श्री अष्टावक्रजी महाराज थे तो पूज्य लीलाशाहजी बापू के गुरु थे स्वामी केशवानंदजी महाराज। सद्गुरु के बिना सच्ची समझ, परमात्म-अनुभूति नहीं हो सकती। संत सहजोबाई ने ठीक ही कहा है :

सहजो कारज जगत के, गुरु बिन पूरे नाहिं।
हरि जो गुरु बिन क्यों मिलें, समझ देख मन माहिं ॥

जीवन में आनंद, माधुर्य, शांति एवं समता का अनुभव सद्गुरु के कारण ही होता है। मीराबाई ने भी अपने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है :

गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी।

सद्गुरु करोड़ों जन्मों के कार्य को एक ही जन्म में पूरा करवाकर सच्चिदानंद से मिलाते हैं, शाश्वत का ज्ञान देते हैं, अनुभव कराते हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०१
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४७)
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१३
मूल्य : ₹ ६
आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ **इस अंक में** ॐ ॐ ॐ

पर्व मांगल्य

आत्ममहिमा में जगानेवाला पर्व गुरुपूनम

- पूज्य बापूजी

गुरुपूर्णिमा हमें गुरु बनाने के लिए है । विषय-विकार हमें लघु बनाते हैं । ज्ञान, वैराग्य, विवेक और भगवत्प्राप्ति की ख्वाहिश हमें गुरु बना देती है । गुरु माना ऊँचे सुख का धनी, ऊँचे ज्ञान का धनी, ऊँचे-में-ऊँचे रब का धनी ।

जन्म-जन्मांतर तक भटकानेवाली बुद्धि को बदलकर ऋतम्भरा प्रज्ञा बना दें, रागवाली बुद्धि को हटाकर आत्मरतिवाली बुद्धि पैदा कर दें, ऐसे कोई सद्गुरु मिल जायें तो वे अज्ञान का हरण करके, जन्म-मरण के बंधनों को काटकर तुम्हें स्वरूप में स्थापित कर देते हैं । आज तक तुमने दुनिया का जो कुछ भी जाना है, वह आत्मा-परमात्मा के ज्ञान के आगे दो कौड़ी का भी नहीं है । वह सब मृत्यु के एक झटके में अनजाना हो जायेगा लेकिन सद्गुरु तो दिल में छुपे हुए दिलबर का ही दीदार करा देते हैं । ऐसे समर्थ सद्गुरुओं की दीक्षा जब हमें मिल जाती है तो जीवन की आधी साधना तो ऐसे ही पूरी हो जाती है ।

यदि तुम अज्ञान में ही मंत्र जपते जाओगे तो मंत्रजप का फल होगा तुम्हारी वासनापूर्ति और वासनापूर्ति हुई तो तुम भोग भोगोगे । समाधि से उठे तो योग कम्पित हो जाता है, भोगों में भी योग कम्पित हो जाता है लेकिन एक ऐसी अवस्था है कि भोग और योग दोनों बौने हो जाते हैं । ब्रह्मज्ञानी भोगते हुए भी अभोक्ता हैं, करते हुए भी अकर्ता हैं, खिन्न होते हुए भी खिन्न नहीं हैं, ऐसे अपने पद में पूर्ण हैं । उसीको बोलते हैं :

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ।
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥

पूरा पाइये । इन्द्र पद पूरा नहीं है, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पद भी पूरा नहीं है । राष्ट्रपति पद से उतरे हुए लोगों को देखो, इन्द्र पद से उतरे हुए लोगों को भी कैसी-कैसी योनियों में भटकना पड़ता है ! ब्रह्मपद ही पूरा है !

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष ।
मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥

पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।...

ऐसे आत्मानुभव से तृप्त महापुरुषों की, ब्रह्मवेत्ता सद्गुरुओं की पूजा का जो पावन दिन है, वही गुरुपूनम है।

गुरुपूनम का उद्देश्य

'व्यासपूर्णिमा' का उद्देश्य है कि आपके जीवन की शैली सुव्यवस्थित हो जाय। सुख आपको गुलाम न बनाये, दुःख आपको दबोचे नहीं। मृत्यु का भय आपको सताये नहीं क्योंकि आपकी कभी मौत हो नहीं सकती। जब भी मरेगा तो मरनेवाला शरीर मरेगा। तुमको मौत का बाप भी नहीं मार सकता और भगवान भी नहीं मार सकते क्योंकि भगवान का आत्मा और तुम्हारा आत्मा एक ही है। घड़े का आकाश और महाकाश एक ही है।

जो गुरु से वफादार है वह मृत्यु के समय मौत के सिर पर पैर रखकर अमरता की तरफ चला जाता है। सत्संग हमें अमर रस देता है, अमर ज्ञान देता है, अमर जीवन की खबर देता है।

गुरुपूनम का पावन संदेश

आप नहा-धोकर तिलक लगा के फिर ठाकुरजी को नहलाओ, तिलक लगाओ - ऐसी व्यवस्था है, ऐसी परम्परा है ताकि आपको पता चले कि 'जो ठाकुरजी हैं, वे मेरे आत्म-ठाकुरजी के बल से सुंदर बनते हैं। मैं ही सौंदर्य का विधाता हूँ। देवमूर्ति, गुरुमूर्ति, गुरु-भगवान, ये भगवान... इस मुझ भगवान से ही उनकी सिद्धि होती है।' कब तक नाक रगड़ते रहोगे ? मरनेवाला शरीर आप नहीं हो, दुःखी होनेवाला मन आप नहीं हो, चिंतित होनेवाला चित्त आप नहीं हो। आप इन सबको जानते हो। आप जाननेवाले को जान लो तो आपका दीदार करनेवाला निहाल हो जायेगा। आपकी नूरानी निगाहें जिन पर पड़ेंगी, वे खुशहाल होने लगेंगे। आपको छूकर जो हवाएँ जायेंगी, वे भी लोगों को पाप-ताप से मुक्त करके सत्संगी बना देंगी। जिसको आत्मप्रीति मिलती है, वृक्षादि का भी कल्याण करने की आध्यात्मिक आभा उसके पास होती है। आप कितने महान हैं, आपको पता नहीं। आप कितने सुखस्वरूप हैं, आपको पता नहीं।

आज पक्का कर लो कि यह गुरुपूर्णिमा हमें गुरु बनाने के लिए है। विषय-विकार हमें लघु बनाते हैं। ज्ञान, वैराग्य, विवेक और भगवत्प्राप्ति की ख्वाहिश हमें गुरु बना देती है। गुरु माना ऊँचे सुख का धनी, ऊँचे ज्ञान का धनी, ऊँचे-में-ऊँचे रब का धनी। ईश्वर ने आपको दास बनाने के लिए सृष्टि नहीं बनायी है, ईश्वर ने तो आपको प्रेमी बनाने के लिए सृष्टि बनायी है। आप ईश्वर के हो, ईश्वर आपके हैं। सिकुड़-सिकुड़कर भीख मत माँगो। **देवो भूत्वा देवं यजेत् ।** 'देव होकर देव का पूजन करें।'

जो नानकजी के समय में नानकजी को देखते होंगे, उनको कितनी आसानी हुई होगी ! हयात महापुरुष को देखने-सुनने से आत्मज्ञान में बड़ी आसानी हो जाती है। कबीरजी, नानकजी हो गये, तब हो गये लेकिन अभी भी तो कोई हैं, हमारी आँखों के सामने हैं। उनसे कितना उत्साह मिलता है, कितना विश्वास अडिग होता है ! हमें भी हयात महापुरुष लीलाशाहजी प्रभु मिले तो हमें बड़ी आसानी हो गयी और तुम्हें भी आसानी है। फिर काहे को ढीलापन, काहे को लिहाज रखते हो ? परिस्थितियों का ज्यादा लिहाज न रखो, ज्यादा इंतजार मत करो। चल पड़ो जहाँ सद्गुरु तुम्हें ले जाना चाहते हैं।

गीता में समाधि से भी श्रेष्ठ एक अन्य वर्णित वस्तु है समत्व । समाधि से पतन हो सकता है, भक्त की भावना बदल सकती है लेकिन साधक अगर एक बार समता के सिंहासन पर आरूढ़ हो जाता है तो फिर वहाँ से उसका पतन नहीं हो सकता । स्वयं भगवान ने कहा है : 'समता मेरा परम धाम है ।'

नारी ! तू नारायणी...

वेणाबाई की गुरुनिष्ठा

एक बार समर्थ रामदासजी मिरज गाँव (महाराष्ट्र) पधारे। वहाँ उन्होंने किसी विधवा कन्या को तुलसी के वृंदावन (गमले) के पास कोई ग्रंथ पढ़ते देख पूछा : ''कन्या ! कौन-सा ग्रंथ पढ़ रही हो ?''

''एकनाथी भागवत।''

''ग्रंथ तो अच्छा खोजा है किंतु उसका भागवत धर्म समझा क्या ?''

''स्वामीजी ! मुझ भोली-भाली को क्या समझ में आयेगा और समझायेगा भी कौन ? मैं तो सिर्फ देख रही थी।''

सच्चे, भोले व छल-कपटरहित मनवाले व्यक्ति पर भगवान व भगवत्प्राप्त महापुरुष सहज में ही बरस जाते हैं। समर्थजी भी उसकी यह सरल, निर्दोष हृदय की बात सुनकर प्रसन्न हो गये व मौन रहकर अपनी नूरानी नजरों से उस कन्या पर कृपा बरसा के चल दिये। उनकी कृपा से वेणा के हृदय में भागवत धर्म जानने की अत्यंत तीव्र उत्कंठा जाग उठी। उसने एक बुजुर्ग से भागवत धर्म समझाने के लिए आग्रह किया परंतु उन्होंने कहा : ''बेटी ! तुझे जो सत्पुरुष मिले थे न, वे तो परमात्मा का प्रकट रूप हैं, भागवत धर्म का साक्षात् विग्रह हैं, वे ही तुझे भागवत धर्म का सही अर्थ बता सकते हैं।''

यह सुनते ही वेणा के हृदयपटल पर समर्थजी की मनोहर छवि छा गयी और वह उनके दर्शन की आस में चातक की नाईं व्याकुल रहने लगी। ईश्वर माँग और पूर्ति का विषय है। जिसकी तीव्र माँग, तीव्र तड़प होती है, ईश्वर और गुरु स्वयं ही उसके पास खिंचे चले आते हैं। वेणाबाई के हृदय की पुकार समर्थजी तक पहुँच गयी और वे भ्रमण करते हुए वहाँ आ पहुँचे। वेणा ने बड़े ही अहोभाव से उनका पूजन किया और मंत्रदीक्षा के लिए याचना की। वेणा की तड़प देखकर समर्थ प्रसन्न हुए और उसे दीक्षा देकर पुनः यात्रा पर चले गये। इधर वेणा भगवत्प्रेम के रंग में ऐसी रँग गयी कि उसका सारा दिन गुरु-स्मरण, गुरुमंत्र-जप व कीर्तन-ध्यान में बीतने लगा।

कुछ दिनों बाद वेणाबाई को पता चला कि गुरु समर्थ का कीर्तन-सत्संग कोल्हापुर के माँ अम्बा मंदिर में चल रहा है। वेणा तुरंत वहाँ पहुँची। अब वह नित्य अपने गुरुदेव का सत्संग एकाग्रता व प्रेम से सुनती, गुरुजी को एकटक देखती और तत्परता से वहाँ सेवा करती। जब समर्थ का कीर्तन होता तो उसमें वह इतनी तन्मय होती कि उसे अपनी देह की भी सुध नहीं रहती। जब गुरुजी का वहाँ से प्रस्थान करने का समय आया तो वेणा ने गुरुजी को उनके साथ उसे भी ले चलने की प्रार्थना की। समर्थजी ने लोकनिंदा का भय बताकर वेणा के समर्पण की परीक्षा लेनी चाही। वेणाबाई ने कहा : ''गुरुदेव ! संसारी लोग मेरे उद्धार का मार्ग नहीं जानते तो उनकी बात मानने से मुझे क्या लाभ ? यदि आप मुझे साथ नहीं ले गये तो ये प्राण इस तन में नहीं रह पायेंगे। निरर्थक आयुष्य बिताने से मरना अच्छा !''

वेणा की निष्ठा देखकर समर्थजी अति प्रसन्न हुए तथा उसे आश्वासन दिया कि समय आने पर वे उसे जरूर ले जायेंगे।

गुरु-शिष्या की इस वार्ता को सुनकर किन्हीं दुष्ट लोगों ने वेणा के सास-ससुर के कान भर दिये। सास-ससुर ने बिना कुछ सोचे-समझे वेणाबाई को

हमेशा के लिए मायके भेज दिया। वहाँ भी स्वार्थी संसार ने अपना असली रूप दिखाया। लोकनिंदा के भय से माता-पिता ने वेणा को जहर खिला दिया। जहर के प्रभाव से वेणा के प्राण निकलने लगे लेकिन धन्य है उसकी गुरुनिष्ठा ! धन्य है उसकी ईश्वरप्रीति ! कि मौत गले का हार बन रही है और वेणा को 'अब मुझे गुरु माऊली का दर्शन-सान्निध्य कैसे मिलेगा ?' यह दुःख सताये जा रहा है। शिष्या की पुकार सुन गुरु समर्थ वेणा के कमरे में प्रकट हो गये। भारी पीड़ा में भी वेणा ने गुरुजी के चरणों में प्रणाम किया। गुरु समर्थ ने वेणा के मस्तक पर अपना कृपाहस्त रखा और उसके शरीर में नवचेतना का संचार हो गया।

माता-पिता ने जैसे ही दरवाजा खोला तो आश्चर्य ! वेणा बड़े आनंद से गुरुजी से उपदेश सुन रही थी। अपने स्वार्थपूर्ण दुष्कृत्य से लज्जित हो माँ-बाप ने समर्थजी से क्षमा माँगी : ''महाराज ! लोकनिंदा के भय से हमसे इतना बड़ा अपराध हो गया। अब आपकी कृपा से हमारी वेणा हमें वापस मिल गयी।''

समर्थजी मुस्कराये, बोले : ''तुम्हारी वेणा ! वह तो जब तुमने विष दिया तभी मर गयी थी। अब जो वेणा तुम्हें दिख रही है, वह समर्थ की सत्शिष्या 'वेणाबाई' है और अब वह रामजी की सेवा के लिए जायेगी।''

माता-पिता ने वेणा को जाने से बहुत रोका किंतु उसके चित्त में वैराग्य का सागर हिलोरें ले रहा था, वह एक पल भी नहीं रुकी।

समर्थ रामदासजी के सान्निध्य में रहते हुए वेणाबाई बड़ी निष्ठा एवं तत्परता से अपना अधिकांश समय गुरुदेव एवं सत्संगियों के लिए भोजन बनाना आदि सेवाओं में लगाती थी और कुछ समय सत्संग-कीर्तन-ध्यान में आकर तन्मय हो जाती। उसकी सेवानिष्ठा से सभी प्रसन्न थे। समय पाकर प्रखर सेवा-साधना के प्रभाव से उसका भक्तियोग फलित हो गया और गुरुकृपा से उसके हृदय में भागवत धर्म का रहस्य प्रकट हो गया।

एक बार रामनवमी के उत्सव पर वेणा ने गुरुदेव समर्थ से देह छोड़कर राम-तत्त्व से एकाकार होने की आज्ञा माँगी। समर्थ बोले : ''समय आने पर मैं स्वयं तुझे आज्ञा दूँगा।'' वेणाबाई ने गुरुआज्ञा शिरोधार्य की।

कुछ दिनों बाद अचानक समर्थजी बोले : ''वेणे ! आज तेरा कीर्तन सुनने के बाद मैं तुम्हें निर्वाण देता हूँ।''

गुरुहृदय का छलकता प्रेम वेणाबाई ने पचा लिया था। उसने गुरुजी को प्रणाम किया और कीर्तन में तन्मय हो गयी। कीर्तन चला तो ऐसा चला, मानो भक्तिरस के सागर में ज्वार आकर वह चरम पर पहुँच गया हो। वेणाबाई के वियोग की घड़ियाँ जानकर सभीकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह चलीं। कीर्तन पूरा होते-होते वेणा की भावसमाधि लग गयी। समर्थजी भी कुछ समय समाधिस्थ हुए, फिर बोले : ''वेणा ! तुमने गुरुभक्ति व निष्ठा की अखंड ज्योत जलाकर असंख्य लोगों को भक्ति का मार्ग दिखाया है। तुम्हारा जीवन सार्थक हो गया है। अब तुम आनंद से रामचरण में जाओ।''

वेणाबाई भावविभोर होकर बोली : ''करुणासागर गुरुदेव ! जीवनभर मैंने आपके ही चरणों में सच्चा सुख, सच्चा ज्ञान, सच्चे आनंद की अनुभूति पायी है। आपके चरण ही मेरे लिए रामचरण हैं, उन्हींमें मुझे परम विश्रांति मिलेगी।'' ऐसा कहते-कहते वेणाबाई ने समर्थजी के चरणों में अपना मस्तक रखा और 'रामदास माऊली' शब्दों का उच्चारण कर वह राम-तत्त्व से एकाकार हो गयी।

धन्य है वेणाबाई की गुरुभक्ति और गुरुनिष्ठा ! वेणा का तुलसी-वृंदावन आज भी उसकी गुरुभक्ति की अमर गाथाएँ सुनाता है।

***

(मुखपृष्ठ २ से 'अलौकिक सामर्थ्य के धनी : सद्गुरु' का शेष)

सद्गुरु सत् से कर्मों की शुद्धि, चित् से ज्ञान की शुद्धि एवं आनंद से सुख की शुद्धि करा के यानी शिष्य के सत्-चित्-आनंद को विकसित करा के उसके पुण्यकर्मों को महका देते हैं। हजारों जन्मों के माता-पिता, साथी-मित्र भी जो नहीं दे सकते हैं, वह सद्गुरु सहज भाव से हँसते-हँसते दे देते हैं। कैसी अनोखी कला है देने की !

सद्गुरु मूर्ख से भी सीखते हैं एवं ज्ञानी को भी उपदेश करते हैं ! मच्छर से भी डरते हैं और सिंह से तो कुश्ती करते हैं ! अपने पास कुछ भी नहीं और माँगनेवाले को सब कुछ दे देते हैं ! जरूरत पड़े तो भीख माँगकर भी खा लेते हैं एवं भिखारी को सम्राट बना देते हैं ! उनकी तुलना किससे की जाय ?

उनके संकल्प में, विचार में असीम सामर्थ्य होता है। उनकी दृष्टि भी अत्यंत पुण्यशाली होती है।

नजरों से वे निहाल हो जाते हैं,
जो सद्गुरु की निगाहों में आ जाते हैं।

सद्गुरु की महिमा को जानते हुए पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री गुलजारीलाल नंदा ने कहा था : ''मुझे भी किन्हीं ब्रह्मज्ञानी श्री लीलाशाह बापू जैसों का संग मिला होता तो मैं भी स्वामी विवेकानंद या संत श्री आशारामजी बापू जैसा बन गया होता...''

ऐसे सद्गुरुओं की महिमा पूज्य श्री लीलाशाहजी महाराज के एक जीवन-प्रसंग से प्रकट होती है :

एक संत-सम्मेलन में साँईं श्री लीलाशाहजी बापू से एक पंजाबी संत ने पूछा : ''हम सभीके माता-पिता हैं तो भगवान के भी तो माता-पिता होंगे न ? मूल में भगवान के माता-पिता कौन हैं ?''

तब पूज्यपाद साँईं श्री लीलाशाहजी बापू ने सहजता से जवाब दिया : ''भगवान के माता-पिता हैं संत।''

''कैसे ?''

''दशरथ को राम की प्राप्ति का मार्ग तो संत ने ही बताया था न ?''

और संत बनाने में सद्गुरु भी कहाँ ढील रखते हैं ? वे नश्वर संसार में ही शाश्वत की खबरें सुनाते हैं, परम तत्त्व परमात्मा की मुलाकात करा देते हैं। कितना उपकार है ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की दृष्टि में कि घोर-से-घोर पातकी भी यदि पापों का बड़ा पहाड़ लेकर ब्रह्मवेत्ता के पास जाता है तो ब्रह्मवेत्ता की नजर एवं वाणी से वह निष्पाप होने लगता है और उसके पापों का पहाड़ देखते-ही-देखते अदृश्य होने लगता है। 'नारद पुराण' में तो यहाँ तक कहा गया है : 'जिन पर महापुरुषों की दृष्टि पड़ती है, वे महापातक या उपपातक से युक्त होने पर भी अवश्य परम पद को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसे पुण्यात्मा पुरुष यदि किसीके शव को, उसकी भस्म को अथवा उसके धुएँ को भी देख लें तो वह परम पद को प्राप्त हो जाता है।'

'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में भगवान वसिष्ठजी श्रीरामचंद्रजी से कहते हैं : ''हे रामजी ! ज्ञानीजनों का बहुत बड़ा उपकार है। उनकी भलीप्रकार से सेवा करनी चाहिए।''

व्यवहार की कुशलता, राज्य-शासन चलाने की योग्यता, जीवन में दिव्यता, विचारवान जैसी दृष्टि, इहलोक एवं परलोक में सफल होने की कुंजियाँ भी ब्रह्मवेत्ता सद्गुरुओं की ही तो देन हैं ! उनके आदर-पूजन से आप आत्मप्राप्ति में सफल हो जाओ, यही गुरुपूर्णिमा का उद्देश्य है।

ब्रह्मवेत्ता सद्गुरुओं की, सत्पुरुषों की अत्यंत दुर्लभता का वर्णन जगद्गुरु श्रीमद् आद्य शंकराचार्य

ने 'विवेकचूड़ामणि' में किया है :

दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रहहेतुकम् ।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ।।

'भगवत्कृपा ही जिनकी प्राप्ति का कारण है वे मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व (मुक्त होने की इच्छा) और महापुरुषों का संग - ये तीनों ही दुर्लभ हैं।'

ऐसे दुर्लभ महापुरुष की, सद्गुरु की महिमा का वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है !

संत एकनाथजी महाराज कहते हैं कि परमात्मा के आनंद को छूकर आती हुई ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु की वाणी, उनकी दिव्य देह को छूकर आती हुई हवा भी अंतःकरण को शुद्ध करने की क्षमता रखती है। ऐसे शुद्ध हुए अंतःकरण में विचार भी शुद्ध स्फुरित होते हैं। शुद्ध विचारों से शुभ कर्मों का उदय होता है एवं शुभ कर्मों का फल भी शुभ होता है। हरि प्रसन्न होते हैं तो भक्त को भौतिक पदार्थ दे देते हैं परंतु सद्गुरु प्रसन्न होते हैं तो साधक-शिष्य को हरि ही दे देते हैं।

गुरुपूर्णिमा के दिन शिष्य को गुरु के द्वार पर अवश्य जाना चाहिए। उस दिन गुरु वर्षभर हुए अपने अनुभव का निचोड़ संकेत द्वारा, संकल्प द्वारा, आदेश द्वारा, वातावरण या दृष्टि द्वारा शिष्य को देकर उसे आध्यात्मिक यात्रा में अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते हैं, उत्साहित करते हैं। सद्गुरु इस दिन सुकर्मी को सत्कर्मों में प्रवृत्त होने का संकेत करते हैं, भक्त को भक्ति के रस में सराबोर कर देते हैं एवं ज्ञान की जिज्ञासावाले के लिए ज्ञान के द्वार खोल देते हैं। शास्त्र कहते हैं : ''गुरु के दर्शन के लिए जाओ तब खाली हाथ मत जाना।'' किंतु सद्गुरु को तो कुछ भी नहीं चाहिए। वे तो कहते हैं :

तू मुझे अपना उर आँगन दे दे,
मैं अमृत की वर्षा कर दूँ।

'आप यदि देना ही चाहो तो मुझे अपनी मान्यताएँ दे दो, अपना अहं दे दो ताकि मैं अपने 'स्व' के, आत्मा के अनुभव से आपका हृदय छलका दूँ।'

जब तक संसार में ब्रह्मविद्या की जिज्ञासा बनी रहेगी, तब तक सद्गुरुओं की पूजा भी होती ही रहेगी। ब्रह्मज्ञान का सत्कार ही गुरु का सत्कार है एवं गुरु का आदर ही ब्रह्मज्ञान का आदर है।

समाज की सच्ची सेवा तो ब्रह्मज्ञानी ही कर सकते हैं। आज केवल भूखे को अन्न एवं गरीब को वस्त्र देकर सेवा का संतोष मान लें ऐसे गुरुओं की आवश्यकता नहीं है, वरन् दुःखियों के अश्रु पोंछें, अभक्त को भक्त बना दें, अयोगी को योगी बना दें, अज्ञानी को ज्ञानी बना दें, हारे हुए में हिम्मत भर दें, हताश में उत्साह का संचार कर दें, भयभीत को निर्भय बना दें, अशांत को शांति का दान दे दें, शुष्क में रस भर दें एवं रसिक को रसदाता के साथ मिला दें ऐसे गुरु की आवश्यकता है। उपदेश के साथ निहित अपने शुभ संकल्प, स्वानुभूति एवं करुणा से समाज को उन्नत करके ईश्वर में जनसाधारण का विश्वास दृढ़ कर दें ऐसे गुरु की आवश्यकता है। इसीलिए गुरुपूर्णिमा जैसे उत्सव एवं व्रत का महत्त्व है। आप सभीको गुरुपूर्णिमा की खूब-खूब बधाई हो और मेरे गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम हों !

***

विद्यालाभ के लिए मंत्र

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम जिह्वाग्रे वद वद ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।'
इस मंत्र का २२ जुलाई को सुबह ८-५८ बजे के बाद १०८ बार जप करें और रात्रि ११ से ११-४७ बजे के बीच जीभ पर लाल चंदन से **'ह्रीं'** मंत्र लिख दें। जिसकी जीभ पर यह मंत्र इस विधि से लिखा जायेगा, उसे विद्यालाभ व विद्वत्ता की प्राप्ति होगी।

लाल चंदन हेतु दिल्ली व अहमदाबाद आश्रम से सम्पर्क करें।

***

बाल संस्कार माला

वाहवाही का गुरूर, कर दे योग्यता चूर-चूर

शिष्य के जीवन में जो भी चमक, आभा, विशेषता दिखती है, वह उसकी इस जन्म की या अनेकों पूर्वजन्मों की गुरुनिष्ठा का ही फल है। कभी-कभी प्रसिद्धि के शिखर पर चढ़ते-चढ़ते शिष्य मानने लगता है कि यह प्रतिभा उसकी खुद की है। बस, तभी से उसका पतन शुरू हो जाता है। परंतु गुरुदेव ऐसे करुणावान होते हैं कि वे शिष्य को पतन की खाई में गिरने से बचाते ही नहीं बल्कि उसकी उन्नति के लिए भी हर प्रयास करते रहते हैं।

एक शिष्य ने अपने गुरु से तीरंदाजी सीखी। गुरु की कृपा से वह जल्द ही अच्छा तीरंदाज बन गया। सब ओर से लोगों द्वारा प्रशंसा होने लगी। धीरे-धीरे उसका अहंकार पोषित होने लगा। वाहवाही के मद में आकर वह अपने को गुरुजी से भी श्रेष्ठ तीरंदाज मानने लगा।

मान-बड़ाई की वासना मनुष्य को इतना अंधा बना देती है कि वह अपनी सफलता के मूल को ही काटने लगता है। शिष्य का पतन होते देख गुरु का हृदय करुणा से द्रवीभूत हो गया। उसे पतन से बचाने के लिए उन्होंने एक युक्ति निकाली।

एक दिन गुरुजी उसे साथ लेकर किसी काम के बहाने दूसरे गाँव चल पड़े। रास्ते में एक खाई थी, जिसे पार करने के लिए पेड़ के तने का पुल बना था। गुरुजी उस पेड़ के तने पर सहजता से चलकर पुल के बीच पहुँचे और शिष्य से पूछा : ''बताओ, कहाँ निशाना लगाऊँ ?''

शिष्य : ''गुरुजी ! सामने जो पतला-सा पेड़ दिख रहा है न, उसके तने पर।'' गुरुजी ने एक ही बार में लक्ष्य-भेदन कर दिया और पुल के दूसरी ओर आ गये। फिर उन्होंने शिष्य से भी ऐसा करने को कहा। अहंकार के घोड़े पर सवार उस शिष्य ने जैसे ही पुल पर पैर रखा, घबरा गया। जैसे-तैसे करके वह पुल के बीच तो पहुँचा किंतु जैसे ही उसने धनुष उठाया, उसका संतुलन बिगड़ने लगा और वह घबराकर चिल्लाया : ''गुरुजी ! गुरुजी ! बचाइये, वरना मैं खाई में गिर जाऊँगा।''

दयालु गुरुजी तुरंत गये और शिष्य का हाथ पकड़कर दूसरी तरफ ले आये। शिष्य की जान-में-जान आयी। उसका सारा अभिमान पानी-पानी हो गया। अब उसे समझ आ गया कि उसकी सारी सफलताओं के मूल गुरु ही थे। वह अपने गुरु के चरणों में साष्टांग पड़ गया और क्षमा माँगते हुए बोला : ''गुरुदेव ! प्रसिद्धि के अहंकार में आकर मैं अपने को आपसे भी श्रेष्ठ मानने की भूल कर रहा था। मैं भूल गया था कि मुझे जो मिला है वह सब आपकी कृपा से ही मिला है। गुरु के कृपा-प्रसाद को मैं मूर्खतावश खुद की शक्ति समझ बैठा था। जैसे हरे-भरे पौधे का आधार उसका मूल ही है, वैसे ही मेरी योग्यता का आधार आप ही हैं। हे गुरुदेव ! मुझे क्षमा करें और ऐसी कृपा कीजिये कि फिर मेरी ऐसी दुर्बुद्धि न हो।'' शिष्य के आर्त हृदय की प्रार्थना और पश्चात्ताप देख गुरुजी मुस्कराये, अपनी कृपादृष्टि बरसायी और आश्रम की ओर चल दिये।

'यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।'
समाधि लगानेवाला, ध्यान करनेवाला योगी तो है लेकिन व्यवहार में रहते हुए दूसरों के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होनेवाला उससे भी श्रेष्ठ योगी है। इस सिद्धांत को केवल बुद्धि में ही ग्रहण करने से काम नहीं चलेगा। इसे तो दैनिक व्यवहार एवं आचरण में उतारना होगा। यह गीता का परम योग है।

शास्त्र दोहन

पंचम पिता निजस्वरूप में जगाते

आज तक तो सुना होगा कि एक पिता, एक माता लेकिन 'एकनाथी भागवत' ने तो बड़ा सूक्ष्म रहस्य खोलकर रख दिया। पाँच पिता होते हैं। **एक** तो माँ के गर्भ में गर्भाधान किया, वह जन्मदाता पिता होता है। **दूसरा पिता** वह होता है जिसने जन्म के बाद उपनयन संस्कार किया, मानवता की विधि कर दी। खिलाने-पिलाने-पोसने का काम जिसने किया वह **तीसरा पिता** तथा जो भय और बंधन से छुड़ाने की दीक्षा-शिक्षा देते हैं, वे **चतुर्थ पिता** माने जाते हैं। 'जो सत् है, चित् है, आनंद है वही तू है। तुझे बंधन पहले था नहीं, अभी है नहीं, बाद में हो सकता नहीं। यह रज-वीर्य से पैदा होनेवाला शरीर तू नहीं है। खा-पीकर पुष्ट होनेवाली देह तू नहीं है। संस्कारों को समझनेवाला मन तू नहीं है। निश्चय करनेवाली बुद्धि तू नहीं है। तू है अपना-आप, हर परिस्थिति का बाप!' - यह अनुभव करानेवाले, जन्म-मरण के भय से छुड़ानेवाले **पंचम पिता सद्गुरु** होते हैं। माता, पिता, बंधु, सखा, दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु - सबका दायित्व उनके द्वारा सम्पन्न हो जाता है। ऐसे महापुरुष के लिए संत कबीरजी ने कहा :

सद्गुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट॥

जो पहले जन्मदाता माँ-बाप हैं वे तो मोह से पालन-पोषण करेंगे लेकिन जो सच्चे बादशाह (सद्गुरु) होते हैं वे प्रेम से पालन-पोषण करते हैं। मोह में माँग रहती है, प्रेम में कोई माँग नहीं। प्रेम अपने-आपमें पूर्ण है।

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ।
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ।

एक प्रेम ही पूर्ण है। हिरण्यकशिपु ने दैत्यों को सुखी किया लेकिन स्वयं सुख के लिए अहंकार की गोद में बैठता था, 'मैं भगवान हूँ।' रावण ऐश-आराम की, विकारों की गोद में बैठता है, 'यह ललना सुंदर है, यह सुंदर है।' परंतु प्रेमदेवता के चरणों में पहुँचना बहुत ऊँची बात है!

जन्म देता है पिता तो केवल पिता ही रहता है, माता दूसरी होती है। लेकिन वह सच्चा बादशाह है जो माता की नाईं वात्सल्य भी देता है और पिता की नाईं हमारे सद्ज्ञान का, सद्विचारों का पालन भी करता है। ब्रह्मज्ञानी गुरु तो माता, पिता, बंधु, सखा... अरे, ब्रह्म होता है! उस ब्रह्म-परमात्मा की गति-मति कोई देवी-देवता, यक्ष, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, दुनिया के सारे बुद्धिमान मिलकर भी नहीं जान सकते।

जीव जब तक जीवित है तब तक भोग का आकर्षण रहता है। स्वर्ग का, ब्रह्मलोक का सुख जीव भोगता है, ईश्वर नहीं। जीने की, पाने की वासना रही तब तक जीव है लेकिन जब पंचम पिता मिलता है तो जीवन और मृत्यु जिससे होती है, उस वासना पर वह ज्ञान की कुल्हाड़ी, कैंची चलाता है। **ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं...** ज्ञान से कर्मबंधन कट जाते हैं, वासना कट जाती है। वह पंचम पिता शिष्य को वास्तविक कर्तव्य बताता है। नहीं तो नासमझ लोग बोलते हैं, 'मैं वकील हूँ, वकालत करना मेरा कर्तव्य है।' 'मैं महंत हूँ, आश्रम चलाना मेरा कर्तव्य है।' 'मैं माई हूँ, मैं भाई हूँ, यह मेरा कर्तव्य है।' नहीं-नहीं बेटा! जिसके साथ जो संबंध है उसके अनुरूप उसका भला कर लिया, अपने लिए उससे कुछ न चाहा और अपने-आपमें पूर्णता है, उसमें विश्राम पाया - यह तुम्हारा कर्तव्य है।

देखा अपने आपको मेरा दिल दीवाना हो गया।
न छेड़ो मुझे यारों मैं खुद पे मस्ताना हो गया॥

अतः शिष्य के लिए सद्गुरु ही सच्चे माता-पिता हैं, जो उसे निजस्वरूप में जगा देते हैं।

प्रसंग माधुरी

गुरुसेवा सबहुन पर भारी

गुजरात के सुरेन्द्रनगर जिले के कांत्रोड़ी गाँव में मेघजी नाम का गरीब लड़का एक व्यापारी के यहाँ गाय चराने की नौकरी करता था । एक दिन जंगल में गाय चराते समय उसे गुफा में एक समाधिस्थ महात्माजी के दर्शन हुए । मेघजी ने प्रणाम किया । महात्माजी ने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा : ''मेघजी ! मुझे गाय का दूध पीना है । मुझे एक लोटा दूध दुहकर दो ।''

मेघजी को आश्चर्य हुआ कि 'इन्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ !' उसने कहा : ''महाराजजी ! ये गायें मेरी नहीं हैं, मैं इन्हें दोहूँगा तो सेठ मारेगा ।''

''तू डर मत । तू एक गाय को मेरे पास ले आ, मैं खुद ही दूध दुह लेता हूँ ।''

मेघजी ने सोचा, 'एक मरकही गाय को ले जाऊँगा तो वह भड़क जायेगी; फिर तो दूध दुहने का सवाल ही नहीं रहेगा ।' वह ऐसी एक गाय को महात्मा के पास ले गया । उनके आत्मभाव से भरे मधुर स्पर्श से गाय शांत खड़ी रही ।

उन्होंने दूध दुहकर कहा : ''बेटा ! तू इन गायों को रोज यहीं चराने ले आना ।''

मेघजी ने सोचा, 'महात्माजी रोज गाय का दूध पी जायेंगे तो सेठ मुझे नौकरी से निकाल देगा । इसीलिए मैं गायों को इस तरफ चराने कभी नहीं लाऊँगा ।' मगर अगले दिन चमत्कार हो गया, सेठ ने मेघजी से कहा : ''कल गायों को जहाँ चराने ले गये थे, वहीं ले जाना । आज सारी गायों ने खूब दूध दिया है । वहाँ चारा अच्छा मिलता होगा ।'' और जिस गाय का दूध महात्माजी ने दोहा था उस गाय की तरफ इशारा करते हुए सेठ ने बताया : ''इसने सबसे ज्यादा दूध दिया है ।'' तब मेघजी को निश्चय हो गया कि जिनके स्पर्श व दर्शनमात्र से ऐसा चमत्कार हो गया, उनकी सेवा से मेरा भी जीवन बदल सकता है । उसने पक्का निर्णय कर लिया कि 'मैं जब तक गायें चराने की नौकरी करूँगा, तब तक गायों को वहीं चराने ले जाऊँगा ।'

मेघजी गायों को रोज वहीं चराने ले जाता और खूब प्रेम से संत को दूध दुहकर देता । छः महीने बीत गये, मेघजी ने अपनी सेवा से महात्मा का हृदय जीत लिया । महात्मा ने प्रसन्न होकर उसे उपदेश दिया : ''ब्रह्मचर्य का पालन करना और तत्परता से ऐसी-ऐसी साधना-सेवा करना ।'' फिर महात्माजी ध्यान-समाधि में लीन हो गये । इन वचनों के पालन में मेघजी पूरी तत्परता से लग गया ।

समय बीता, मेघजी की माँ और मामा ने उसके मना करने पर भी उसकी सगाई तय कर दी । किंतु मेघजी को गुरुजी ने ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए कहा था । अतः गुरुवचनों के उल्लंघन की भारी चिंता से उसके शरीर में जलन होने लगी । उसकी स्थिति मरणासन्न हो गयी । बेटे की ऐसी अवस्था का कारण जान माँ घबरा गयी और उसने तुरंत भाई से कहकर सगाई तुड़वा दी । सगाई टूटते ही मेघजी की जान-में-जान आ गयी और सारा दाह शांत हो गया ।

कुछ समय बाद माँ की मृत्यु हो गयी । संसारी जिम्मेदारियों से मुक्त हुआ मेघजी सीधा गुरुजी के पास पहुँचा । वर्षों बाद शिष्य अपने करुणा-वरुणालय सद्गुरु को और गुरु अपने अधिकारी शिष्य को देखकर बहुत आनंदित हुए । मेघजी का संसार के प्रति तीव्र वैराग्य देख गुरुजी ने उसे पूर्ण ज्ञान दिया । गुरुदेव के हृदय से बरसते आत्मामृत ने साधक की तमाम जन्मों की तपस्याएँ पूरी कर दीं । निष्काम सेवा, गुरुआज्ञा-पालन और पूर्ण समर्पण के प्रभाव से वही गरीब चरवाहा आगे चलकर 'संत मेघस्वामी' बन गया ।

योगामृत

गुरुपूर्णिमा पर साधकों के लिए अनमोल उपहार

सरल व अति लाभप्रद प्राणायाम

अनुलोम-विलोम प्राणायाम

कोई भी प्राणायाम करने से पहले अनुलोम-विलोम प्राणायाम कर लें । दायें नथुने से श्वास लिया, बायें से छोड़ा व बायें से लिया, दायें से छोड़ा, जिससे चंद्र व सूर्य दोनों नाड़ियाँ चलें।

टंक विद्या का एक प्रयोग

प्राणायाम करनेवालों को और सभी साधकों को टंक विद्या का प्रयोग करना चाहिए। बच्चों को भी जो कान में उँगली डाल के 'ॐकार गुंजन' की साधना सिखाते हैं, उसके पहले भी ये दो प्राणायाम कराने चाहिए।

लाभ : यह लगता तो साधारण प्रयोग है लेकिन शरीर के सात केन्द्रों में से यह पंचम केन्द्र को सक्रिय रखता है। नीचे के चार केन्द्रों की अपेक्षा पाँचवाँ केन्द्र हमें छठे केन्द्र में, जो भ्रूमध्य (भौंहों के मध्य) में है, जल्दी पहुँचा देता है; जिससे नीचे के सभी पाँचों केन्द्रों के विकास का फायदा मिल जाता है। एक-एक केन्द्र पर रुकने के बजाय पाँचवें में आये फिर छठे केन्द्र में आ गये । जैसे छलाँग लगाते हैं न, पहली सीढ़ी से सीधा चौथी या पाँचवीं पर पहुँच गये । यह प्राणायाम की विधि ऐसी ही बता रहा हूँ, छलाँगवाली।

विधि : लम्बा श्वास लेकर होंठ बंद करके कंठ से 'ॐ' की ध्वनि निकालते हुए सिर को ऊपर-नीचे करें।

ब्रह्मचर्य-सहायक प्राणायाम

कई लोग ब्रह्मचर्य पालना चाहते हैं और उसके लिए औषधियाँ व दवाइयाँ ले-लेकर थक जाते हैं लेकिन ब्रह्मचर्य में विफल हो जाते हैं। मुख्य कारणों में एक तो है आकर्षित होने का स्वभाव । इस बिगड़े स्वभाव पर कोई औषधि काम नहीं करेगी, ब्रह्मचर्य-नाश हो जायेगा। यदि आकर्षण है तो विवेक जगायें, मुर्दे को देखें, बीमार की कल्पना करें तो आकर्षण छूटेगा और फिर ब्रह्मचर्य-सहायक प्राणायाम करें, जो सहायक है ब्रह्मचर्य पालने में।

लाभ : (१) इससे इन्द्रियाँ संयमित होती हैं और कामविकार से रक्षा होती है।

(२) चित्त एकाग्र रहता है।

(३) कुम्भक करने की शक्ति बढ़ती है।

(४) इस स्थिति में अधिक रहने पर 'अनहद नाद' सुनाई देने लगता है ।

(५) यह प्रयोग उपासना में बड़ा सहायक है।

विधि : पीठ के बल सीधा लेट जायें । रुई या कपड़े के छोटे गोले से अथवा रबड़ के भी आते हैं कान बंद करने के (इयर प्लग), उनसे अथवा तो किसी भी साधन से कान बंद कर दें । बाहर का कोई शब्द सुनाई न दे । नजर नासिका के अग्रभाग पर रखें । आधा घंटा इस स्थिति में रहें व रुक-रुककर गहरा श्वास लेते रहें । फिर आँखों की पुतलियाँ ऊपर चढ़ा दें । इसे अर्धोन्मीलित नेत्र, 'शाम्भवी मुद्रा' कहते हैं । यह एकाग्रता में बड़ी मदद करती है । दृष्टि भौंहों के मध्य में जहाँ तिलक किया जाता है, ले आयें । स्वाभाविक आँखें बंद होने लगेंगी तो होने दें । शरीर को शववत् ढीला छोड़कर भावना करें कि 'चित्त शांत हो रहा है, इन्द्रियाँ संयमी हो रही हैं, ॐ शांति... ।' - ऐसा थोड़ा चिंतन व विश्रांति हो जाय फिर कुम्भक करें । श्वास भीतर रोकें । इसे आभ्यंतर कुम्भक कहते हैं । जितनी देर रोक सके रोकें । फिर एकाएक न छोड़ें, धीरे-धीरे छोड़ें । अब बाह्य कुम्भक करें अर्थात् श्वास बाहर निकाल दें और हो सके उतनी देर श्वास बाहर रोके रखें ।

इससे नाड़ीशुद्धि होगी और नीचे के केन्द्रों में जहाँ विकार पैदा होते हैं, वहाँ से चित्तवृत्ति ऊपर आ जायेगी । अगर आधा घंटे से भी ज्यादा अभ्यास करेंगे और तीनों समय करेंगे तो जो 'अनहद नाद' अंदर चल रहा है, वह शुरू हो जायेगा । गुरुवाणी में आया :

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे।

खान-पान संबंधी सावधानियाँ

* अधिक पका, मिर्च-मसालेयुक्त, तीखा, खट्टा व चटपटा भोजन तथा मद्यपान, मांसाहार, प्याज, लहसुन, खाली पेट चाय-कॉफी, रात्रि में सोने से पूर्व गर्म-गर्म दूध के सेवन और कब्ज से वीर्यनाश होता है । अतः इनसे बचें ।

* आसन ब्रह्मचर्य-साधना के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं । जैसे पादपश्चिमोत्तानासन, सर्वांगासन आदि ।

* **वीर्यरक्षक चूर्ण :** आँवला चूर्ण व पिसी मिश्री का समभाग मिश्रण बनाकर उसमें २० प्रतिशत हल्दी मिला दो । रोज रात्रि को सोने से आधा घंटा पूर्व पानी के साथ एक चम्मच यह चूर्ण ले लिया करो । यह चूर्ण वीर्य को गाढ़ा करता है, कब्ज दूर करता है, वात-पित्त-कफ के दोष मिटाता है और संयम को मजबूत करता है । इसके सेवन से सवा दो घंटे पहले या बाद में दूध न पियें ।

ब्रह्मचर्य के लिए रोज 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' ग्रंथ के २-४ पन्ने पढ़ते हुए उसका ५ बार वाचन पूरा करें ।

सुनहली सीख

*** सोते समय सिर को पूर्व या दक्षिण की ओर ही करके सोना चाहिए । उत्तर की ओर सिर करके सोना वर्जित है । इस प्रकार सोने से बुरे-बुरे स्वप्न दिखते हैं और मनुष्य का आयुष्य क्षीण होता है । जैसे दिशायंत्र की सुई उत्तर की ओर होती है तब स्थिर हो जाती है, उसी प्रकार मस्तक में जो धमनी नाड़ी है जो तालु में लपका करती है, वह जब दोनों ध्रुवों के बीच उत्तर में होती है तब ध्रुवयंत्र की सुई की भाँति ठहर जाती है । इसके ठहरने से मस्तक में रोग होते हैं, जो कभी-कभी भयानक होते हैं । इससे उत्तर की ओर सिर रखकर कभी नहीं सोना चाहिए । * सोने से पहले आँखों में अंजन आँचना चाहिए । हाथ-पाँव धोकर और कुल्ला करके सोना चाहिए । इससे नींद गहरी आती है एवं स्वप्न नहीं दिखते । * रात्रि को सोते समय और सुबह को उठते ही ताजे पानी से सदा मुँह धो डालें तो इससे सुख की कान्ति बनी रहेगी । मुख पर झुर्रियाँ नहीं पड़ेगी ।**

चिंता भगाने की युक्ति

चिंता के कारण रात को नींद नहीं आती हो तो पुकारो : 'हे हरि, हे गोविंद, हे माधव !' १५ से २५ मिनट भगवान का नाम लो और २-४ मिनट हास्य-प्रयोग करो, 'हरि ॐ... ॐ... ॐ... मेरे ॐ... प्यारे ॐ... हा... हा... हा...' प्रारब्ध तो पहले बना है, पीछे बना है शरीर ! संत तुलसीदासजी कहते हैं कि चिंता क्या करते हो ? भज लो श्रीरघुवीर... हे गोविंद ! हे रघुवीर ! हे राम ! दुःख मन में आता है, चिंता चित्त में आती है; मैं तो निर्लेप नारायण, अमर आत्मा हूँ। मैं प्रभु का हूँ, प्रभु मेरे हैं। इससे चिंता भागेगी।

दूसरा, पूरा श्वास भरकर उसे अंदर रोके बिना पूरी तरह बाहर निकाल दें। श्वास भीतर भरते समय भावना करें कि हम निश्चिंतता, आनंद, शांति भीतर भर रहे हैं तथा मुँह से फूँक मारते हुए श्वास बाहर छोड़ते समय भावना करें कि हम चिंता, तनाव, हताशा, निराशा को बाहर निकाल रहे हैं। ऐसा २०-२५ बार करने से चिंता, तनाव एवं थकान दूर होकर तृप्ति का अनुभव होता है।

काहे को चिंता करना ? जो होगा देखा जायेगा। हम ईश्वर के, ईश्वर हमारे ! ईश्वर चेतनस्वरूप हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, आनंदस्वरूप हैं और हमारे सुहृद हैं। चिंता कुतिया आयी तो क्या कर लेगी ? गुरु का संग जीवात्मा को दुःखों से असंग कर देता है। चिंताओं से असंग कर देता है। हरि ॐ... ॐ... ॐ...

चिंता से चतुराई घटे, घटे रूप और ज्ञान ।
चिंता बड़ी अभागिनी, चिंता चिता समान ॥

❊ मामरा बादाम मिश्रण ❊

१०० ग्राम असली मामरा बादाम, १०० ग्राम गाय का घी व मिश्री, काली मिर्च आदि अन्य घटक-द्रव्यों को मिलाकर बने कुल ३५३ ग्राम के इस मिश्रण को चाँदी या संगमरमर के बर्तन में रख के ७ दिन तक अनाज में दबाकर रखा जाता है। यह मिश्रण विधिवत् मंत्रोच्चारण करके बनाया जाता है।

मात्रा : १ चम्मच (८ से १० ग्राम) मिश्रण रोज सुबह खाली पेट चबा-चबाकर खायें तथा हलका आहार लें।

लाभ : इससे सम्पूर्ण नाड़ीतंत्र और बुद्धि पुष्ट होती है। मस्तिष्क की कमजोरी जादुई तरीके से दूर होती है। साथ ही नेत्रज्योति में चमत्कारिक बढ़ोतरी होती है। पूज्य बापूजी ने इस मिश्रण का प्रयोग करके इसके लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

प्राप्ति-स्थान : संत श्री आशारामजी आश्रमों और श्री योग वेदांत सेवा समितियों के सेवाकेन्द्र।

प्रेरक प्रसंग

संत की करें जो निंदा, उन्हें होना पड़े शर्मिंदा

संत तुलसीदासजी काशी में प्रवचन करते थे। दूर-दूर तक उनकी ख्याति फैल चुकी थी। कहते हैं जहाँ गुलाब वहाँ काँटें, जहाँ चंदन वहाँ विषैले सर्प, ऐसे ही जहाँ सर्वसुहृद लोकसंत वहाँ निंदक-कुप्रचारकों का होना स्वाभाविक है। उसमें भी विधर्मियों की साजिश के तहत हमारे ही संतों के खिलाफ, संस्कृति व परम्पराओं के खिलाफ हमारे ही लोगों को भड़काने का कार्य अनेक सदियों से चलता आया है। काशी में तुलसीदासजी की बढ़ती ख्याति देखकर साजिशों की शृंखला को बढ़ाते हुए काशी के ही कुछ पंडितों को तुलसीदासजी के खिलाफ भड़काया गया। वहाँ कुप्रचारकों का एक टोला बन गया, जो नये-नये वाद-विवाद खड़े करके गोस्वामीजी को नीचा दिखाने में लगा रहता था। परंतु जैसे-जैसे कुप्रचार बढ़ता, अनजान लोग भी सच्चाई जानने के लिए सत्संग में आते और भक्ति के रस से पावन होकर जाते, जिससे संत का यश और बढ़ता जाता था।

संत तुलसीदासजी जयंती : १३ अगस्त

अपनी सारी साजिशें विफल होती देख विधर्मियों ने कुप्रचारक पंडितों के उस टोले को ऐसा भड़काया कि उन दुर्बुद्धियों ने गोस्वामीजी को काशी छोड़कर चले जाने के लिए विवश किया। प्रत्येक परिस्थिति में राम-तत्त्व का दर्शन व हरि-इच्छा की समीक्षा करनेवाले तुलसीदासजी काशी छोड़कर चल दिये। जाते समय उन्होंने एक पत्र लिख के शिवमंदिर के अंदर रख दिया। उस पत्र में लिखा था कि 'हे गौरीनाथ ! मैं आपके नगर में रहकर रामनाम जपता था और भिक्षा माँगकर खाता था। मेरा किसीसे कोई वैर-विरोध, राग-द्वेष नहीं है परंतु इस चल रहे वाद-विरोध में न पड़कर मैं आपकी नगरी से जा रहा हूँ।'

भगवान भोलेनाथ संत पर अत्याचार कैसे सह सकते थे ! संत के जाते ही शिवमंदिर के द्वार अपने-आप बंद हो गये। पंडितों ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया पर द्वार न खुले। कुछ निंदकों के कारण पूरे समाज में बेचैनी-अशांति फैल गयी, सबके लिए संत-दर्शन व शिव-दर्शन दोनों दुर्लभ हो गये। आखिर लोगों ने भगवान शंकर से करुण प्रार्थना की। भोलेनाथ ने शिवमंदिर के प्रधान पुजारी को सपने में आदेश दिया : ''पुजारी ! स्वरूपनिष्ठ संत मेरे ही प्रकट रूप होते हैं। तुलसीदासजी का अपमान कर निंदकों ने मेरा ही अपमान किया है। इसीलिए मंदिर के द्वार बंद हुए हैं। अगर मेरी प्रसन्नता चाहते हो तो उन्हें प्रसन्न कर काशी में वापस ले आओ वरना मंदिर के द्वार कभी नहीं खुलेंगे।''

भगवान अपना अपमान तो सह लेते हैं परंतु संत का अपमान नहीं सह पाते। निंदक सुधर जायें तो ठीक वरना उन्हें प्रकृति के कोप का भाजन अवश्य बनना पड़ता है।

अक्षले दिन प्रधान पुजारी ने सपने की बात पंडितों को कह सुनायी। समझदार पंडितों ने मिलकर संत की निंदा करनेवाले दुर्बुद्धियों को खूब लताड़ा और उन्हें साथ ले जाकर संत तुलसीदासजी से माफी मँगवायी। सभीने मिलकर गोस्वामीजी को काशी वापस लौटने की करुण प्रार्थना की। संतश्री के मन में तो पहले से ही कोई वैर न था, वे तो समता के ऊँचे सिंहासन पर आसीन थे। करुणहृदय तुलसीदासजी उन्हें क्षमा कर काशी वापस आ गये। शिवमंदिर के द्वार अपने-आप खुल गये। संत-दर्शन और भगवद्-दर्शन से सर्वत्र पुनः आनंद-उल्लास छा गया।

मंत्रदीक्षा महिमा

विलक्षण है गुरुमंत्र की महिमा

- पूज्य बापूजी

परमात्मा में जो महापुरुष बैठे हुए हैं, उनके वचन परमात्म-तत्त्व को छूकर निकलते हैं। वे वचन मंत्र होते हैं । उन वचनों का अंतर में मनन करने से जिज्ञासु साधकों का उत्थान होता है। **मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।** ऐसा शास्त्रवचन है। मंत्र जपने में जितनी श्रद्धा होगी और जितना उसका अर्थ समझकर जपेंगे, उतना ही अधिक लाभ होगा । गुरुओं के वाक्य, संतों के उपदेश को ठीक से पकड़ेंगे तो संसार-सागर से पार होना कोई कठिन नहीं है, नितांत आसान हो जाता है।

मंत्रदीक्षा का अर्थ

मंत्रदीक्षा लेने का मतलब है पावर हाउसों का पावर हाउस जो आत्मा-परमात्मा है उससे जुड़ना । शिष्य कहलाने के लिए कोई मंत्र ले ले, वह अलग बात है । शिष्य कहलाना एक बात है और सत्‌शिष्य होना दूसरी बात है। सत्‌शिष्य का लक्षण है कि सत्स्वरूप परमात्मा में गुरु जगा रहे हैं तो अपनी ओर से हम आनाकानी न करें । ईश्वर ने कृपा करके मनुष्य-जन्म दिया, गुरु ने कृपा करके मंत्रदीक्षा दी तो हम अपने ऊपर और कृपा करें।

दूसरी बात जिस दिन से हम गुरु धारण करते हैं, उस दिन से मंत्र के द्वारा, दृष्टि के द्वारा आत्मदेव में जगे हुए उन गुरुदेव की हाजिरी हमारे हृदय में हो जाती है, संबंध हो जाता है। फिर शिष्य शरीर से कितना भी दूर हो लेकिन उसकी प्रार्थना, उसके प्रश्न गुरु तक पहुँच जाते हैं । जैसे एक बर्तन से दूसरे बर्तन में घृत प्रवेश करता है, ऐसे ही गुरु के आध्यात्मिक हृदय से शिष्य के हृदय को पुष्टि मिलती है। कछुआ, मछली बच्चों से दूर होकर भी अपनी दृष्टिमात्र से उन्हें पोस लेते हैं, ऐसे ही गुरु कितने भी दूर हों लेकिन सच्चे हृदय से शिष्य का कोई प्रश्न है या पुकार है तो गुरु का बाह्य शरीर तो नहीं दिखेगा लेकिन गुरु-तत्त्व जो सर्वव्यापक ब्रह्मांड में है, वह रक्षा कर लेता है।

मंत्रदीक्षा से नया जन्म

गुरुदीक्षा को दुबारा जन्म माना जाता है । माता-पिता ने इस शरीर को जन्म दिया है लेकिन जिस दिन माँ के गर्भ में बच्चा आया, उस दिन माँ को खबर नहीं, बाप को भी नहीं । समय पाकर वह बच्चा महीने-दो महीने का होता है, तब खयाल आता है कि बच्चा है । फिर ज्यों-ज्यों समय बीतता है, त्यों-त्यों वह गर्भिणी स्त्री सँभल-सँभल के कदम रखती है। ९ महीने होते हैं तब बच्चे का जन्म होता है। वह बच्चा माँ-बाप के शरीर से पुष्ट होकर संसार में जन्म लेता है । उसका जन्म व सर्जन होता है तुच्छ चीजों से, रज-वीर्य से। क्षुद्र चीजों से यह शरीर बनता है लेकिन आध्यात्मिक तत्त्व की जब हमें दीक्षा मिलती है, तब हम 'द्विज' होते हैं अर्थात् हमारा दुबारा जन्म होता है।

पहले माता-पिता के शरीर से इस स्थूल शरीर का जन्म हुआ, फिर गुरुओं के कृपा-प्रसाद से हम लोगों का

जो जन्म होता है वह आध्यात्मिक जन्म होता है। माता और पिता दोनों के दो शरीर मिलकर स्थूल शरीर बनाते हैं लेकिन आध्यात्मिक शरीर को जन्म एक ही गुरु दे देते हैं। इसलिए गुरु को केवल माता या केवल पिता ही नहीं कहा जाता है, गुरु को माता और पिता भी कहा जाता है - **त्वमेव माता च पिता त्वमेव...** लेकिन माता और पिता कहने पर शास्त्रकर्ता ऋषि को संतोष नहीं हुआ। गुरु ईश्वर के मार्ग पर हमको ले चलने के लिए हमारे साथ बंधु जैसा और सखा जैसा भी व्यवहार करते हैं, जैसे श्रीकृष्ण ने अर्जुन के साथ सखा का व्यवहार करते हुए उसे ज्ञान करा दिया। ऋषि ने कहा - गुरु हमारे माता, पिता, बंधु, सखा, विद्या हैं... फिर भी ऋषि रुक नहीं गये। जिनको परमात्म-तत्त्व का अनुभव हुआ है, उन्होंने ही यह प्रार्थना बनायी है। उन्होंने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है। फिर कहते हैं : **गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।** मेरे गुरुजी ब्रह्मा भी हैं। ब्रह्मा जैसे सृष्टि का सर्जन करते हैं, ऐसे ही गुरु ने मेरे आध्यात्मिक शरीर को जन्म दिया फिर उसको उपदेश, आदेशों द्वारा हर वर्ष में गुरुपूनम आदि निमित्त के द्वारा पुष्ट किया। मेरे अंदर जो दूषित संस्कार थे उनको गुरुदेव ने जलाया।

ब्रह्मा होकर सद्संस्कारों की सृष्टि की, विष्णु होकर पालन किया और शिवजी होकर कुसंस्कारों का संहार किया। महेश्वर तक तो कहा, फिर कहते हैं कि महेश्वर का पूजन-अर्चन अच्छा है, सुहावना है, मर गये तो शिवलोक में जायेंगे लेकिन गुरु यहीं आत्मसाक्षात्कार करा देते हैं, ब्रह्मस्वरूप बना देते हैं। इसलिए मेरे गुरु तो साक्षात् परब्रह्म हैं। **गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।** तो ऐसे आत्मारामी गुरु, जिनको वेद के वास्तविक तत्त्व का, तात्त्विक स्वरूप का बोध है, युक्ति द्वारा, शास्त्रों द्वारा, स्मृतियों के द्वारा समझाने की जिनके पास योग्यता है, कला है, शिष्य के संशय-छेदन का जिनमें सामर्थ्य है, जिनकी परब्रह्म-परमात्मा में स्थिति है, निष्ठा है ऐसे संतों को 'श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ' कहा जाता है।

गुरुमंत्र खोले जीवन्मुक्ति के द्वार

ऐसे गुरुओं से मंत्रदीक्षा मिल जाय अथवा मार्गदर्शन मिल जाय और साधक पूरा चल दे तो यहीं, इसी जन्म में परब्रह्म-परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है, वह जीवन्मुक्त होकर जीता है। **कोई उनका उपदेश लेकर चला लेकिन पूरा नहीं पहुँचा है तो भी ऐसे शिष्य को कभी नरक में नहीं जाना पड़ता है।** नरक उसके लिए खत्म हो गया। थोड़ी-बहुत साधना है तो स्वर्ग में जायेगा और उससे बढ़िया समझ या साधना है तो ऊँचे लोकों में जायेगा। ब्रह्मज्ञान का सत्संग सुना है, उसका मनन किया है किंतु साक्षात्कार नहीं हुआ तो मरने के बाद वह ब्रह्मलोक में जायेगा। ब्रह्माजी के पास जो वैभव व सुविधाएँ हैं, सृष्टि के सर्जन के सामर्थ्य को छोड़कर बाकी का पूरा-का-पूरा सुख-वैभव उसको भोगने को मिलेगा। यह शास्त्रीय बात है, किसी छोटे-मोटे व्यक्ति की कल्पना नहीं है अथवा किसी एक महाराज ने कह दिया है, वह बात नहीं है। अगर उस शिष्य को, साधक को आत्मज्ञान पाने की तीव्रता है तो ब्रह्मलोक के भोग भी उसको तुच्छ लगेंगे। फिर श्रेष्ठ, पवित्र आचरणवाले श्रीमान के, किसी योगी के अथवा किसी ऋषि के घर वह फिर जन्म लेगा और उसे जल्दी ज्ञान हो जायेगा, वह मुक्त हो जायेगा। ब्रह्माजी कल्पपर्यंत रहते हैं। अगर उसे तीव्रता नहीं है तो जब तक ब्रह्माजी हैं, ब्रह्मलोक है तब तक वह रहेगा और फिर अंत में ब्रह्माजी उसको जरा-सा ब्रह्म-उपदेश करेंगे और उपदेश लग जायेगा, वह मुक्त हो जायेगा।

मरने के बाद भी तीन चीजें आपका पीछा नहीं छोड़तीं - पुण्य आपको स्वर्ग ले जाता है, पाप आपको नरक में ले जाता है और भगवन्नामयुक्त गुरुमंत्र जब तक भगवत्प्राप्ति नहीं हुई तब तक मरने के बाद भी आपको यात्रा करा के भगवान तक ले जाता है। यह गुरुमंत्र की महिमा है। अतः गुरुमंत्र को साधारण न समझें। प्रीतिपूर्वक, आदरपूर्वक, अर्थसहित नियमित जपते जायें। यह आपको परमात्मदेव में, परमात्म-सुख में प्रतिष्ठित कर देगा।

विवेक जागृति

अनोखा कुआँ

राजा भोज एक आध्यात्मिक व्यक्ति थे । वे चाहते थे कि प्रजा का ज्ञान बढ़े, आनंद बढ़े, माधुर्य बढ़े और मरने के बाद नहीं, जीते-जी प्रजा अध्यात्म-तत्त्व का आनंद ले । महाकवि कालिदासजी भी उसी राजदरबार के कवि थे । तो ऐसे-ऐसे प्रश्न होते थे कि प्रजा की सूझबूझ बढ़ जाय । अमीर बाँटकर खाते और गरीब अमीरों को देखकर ईर्ष्या नहीं करते थे । वे ज्ञान में ही तृप्त रहते थे । उनका अध्यात्म राज्य था । जैसे रामराज्य, कृष्णराज्य... ऐसे ही उन्हींके पदचिह्नों पर चलनेवाले राजा भोज थे ।

एक बार राजा भोज की सभा में एक सवाल उठा कि 'ऐसा कौन-सा कुआँ है जिसमें गिरने के बाद आदमी बाहर ही नहीं निकलता ?' तो इस प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे पाया । आखिर राजा भोज ने राजपंडित को कहा : ''राजपंडित ! आपको प्रणाम है । आज तक जिन प्रश्नों के उत्तर कोई नहीं दे पाया, जहाँ लोग निरुत्तर हो गये वहाँ आपने उत्तर दिये और राज्य की तरफ से आपका सम्मान भी हुआ है । बहुत सारी भेंटें और इनाम भी आपको मिले हैं । अब हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि यह एक गहरा प्रश्न है, इसका उत्तर अभी भले आप नहीं दे पायें तो कोई हरकत नहीं । लेकिन ७ दिन के अंदर इस प्रश्न के उत्तर की हम आपसे उम्मीद करते हैं । अगर आप उत्तर नहीं दे पाये तो आज तक के जितने इनाम आपको मिले हैं, सब आपको वापस करने होंगे और इस नगरी को छोड़कर आपको दूसरी जगह जाना होगा ।''

बड़ी खतरनाक चुनौती सुनकर राजपंडित उत्तर खोजने लगा । ६ दिन बीते, कोई उत्तर ही नहीं मिला । सोचा, 'अब क्या करें ?' तो खुली हवाओं में जाना चाहिए । शुद्ध वातावरण से बुद्धि में थोड़ी शुद्धि आती है । वह जंगल की तरफ गया तो वहाँ से एक गड़रिया गुजरा । बोला : ''आप तो राजपंडित हैं, राजा भोज के दुलारे हैं पर आज आप इतने उदास-से क्यों दिखाई दे रहे हैं ?''

राजपंडित : ''तेरे को क्या पता ? मेरा तो जीवनभर का यश, कमाई और इनाम सब छीन लिये जायेंगे और ऐसे महान राजा की नगरी से मुझे निकाला जायेगा तो मैं कहाँ अपना मुँह दिखाऊँगा ? इसलिए चिंतित हूँ ।''

''पर बात क्या है ?''

''अब तुमको क्या बताऊँ ?''

''बता दो । हो सकता है कि हम भले गड़रिया हैं, लेकिन सत्संग में जाते हैं और हमारे गुरु ब्रह्मज्ञानी हैं, कुछ मदद कर सकें ।''

ब्रह्मज्ञानी का चेला भी कभी-कभी ऐसा काम कर देता है कि पंडित भी देखते रह जाते हैं ।

''अरे यार ! तू इतना हिम्मत से बोलता है ! तो ऐसा है, सवाल है कि ऐसा कौन-सा कुआँ है जिसमें गिरा हुआ आदमी निकलता ही नहीं ?''

उस गड़रिया को गुरु ने तो दे रखा था मंत्र, श्वास अंदर जाय तो ॐ, बाहर आये तो एक... ऐसा करके वह ब्रह्म-परमात्मा में चला गया । था तो गड़रिया,

राजपंडित के आगे तो दो पैसे का था लेकिन ब्रह्मज्ञानी का चेला जो था। उसके पास था न बड़ा बल ! श्वासों की गिनती द्वारा गड़रिया ने ॐ के अधिष्ठान आत्मा में विश्रांति पायी। उसे युक्ति सूझी। बोला : ''पंडितजी ! अब क्या करें...''

''क्या करें क्या ? कल का दिन है। राजा मुझे निकाल देगा।''

''राजा निकाल देगा तो क्यों डरते हो ? मेरे पास एक चीज है।''

''क्या है ?''

''तुम तो विद्वान पंडित हो, ढेर सारा लोहा इकट्ठा करके रोज सोना बनाओ। एक भोज क्या लाखों भोज तुम्हारे पीछे-पीछे घूमेंगे।''

''बात तो बढ़िया है किंतु सोना कैसे मिलेगा ?''

''तुम मेरे चेले बन जाओ, मैं तुमको पारस दे दूँगा।''

''तू तो दो पैसे का गड़रिया और मैं राजपंडित ! तेरा कैसे चेला बनूँ ?''

''मत बनो।''

''अच्छा ! मैं तुम्हारा चेला बनता हूँ।''

''अब बात गयी। बात काट दी न तुमने।''

''और कोई उपाय बताओ।''

''उपाय यह है कि भेड़ का दूध पियो और मेरे चेले बनो तो मैं देता हूँ पारस।''

''अरे ! भेड़ का दूध ब्राह्मण के लिए मना है। पंडित भेड़ का दूध पिये तो बुद्धि मारी जायेगी।''

''तो जाओ।''

''अच्छा समझो, भेड़ का दूध भी पी लेता हूँ, तुम्हारा चेला भी बनता हूँ...''

''अब तो बात गयी।''

''तो क्या करें फिर ?''

''भेड़ का दूध पियो, मेरे चेले बनो इससे काम नहीं चलेगा। अब तो वह दूध पहले मैं पिऊँ, जूठा करूँ, फिर तुम्हें पीना पड़ेगा।''

''तू तो यार हद करता है ! ब्राह्मण को जूठा पिलायेगा ?''

''छोड़ो।''

''अच्छा पीता हूँ।''

''वह बात गयी। अब सामने जो मरे हुए इन्सान की खोपड़ी का कंकाल पड़ा है, उसमें मैं दूध दोहूँगा, उसको मैं जूठा करूँगा, कुत्ते को चटवाऊँगा, फिर तुम पियोगे। तब मिलेगा पारस। नहीं तो आप अपना रास्ता लीजिये।''

''खोपड़ी के कंकाल में पंडित दूध पिये ! बड़ी कठिन बात है पर मैं तैयार हूँ।''

''बस, यही तो कुआँ है ! लोभ, तृष्णा का कुआँ ऐसा है कि उसमें आदमी गिरता जाता है, गिरता जाता है...।''

आशा ही जीव को जन्म-जन्मांतर तक भटकाती रहती है। मरुभूमि में पानी के बिना मृग का छटपटाकर मर जाना भी इतना दुःखद नहीं है, जितना तृष्णावान का दुःखी होना है। शरीर की मौत की छटपटाहट पाँच-दस घंटे या पाँच-दस दिन रहती है लेकिन जीव तृष्णा के पाश में युगों से छटपटाता आया है, गर्भ से श्मशान तक ऐसी जन्म-मृत्यु की यात्राएँ करता आया है। गंगाजी के बालू के कण तो शायद गिन सकते हैं लेकिन इस आशा-तृष्णा के कारण कितने-कितने जन्म हुए यह नहीं गिन सकते। हजार कमाये, लाख बना लिये, लाख का करोड़ बनाया, करोड़ के दस करोड़ बनाये, सौ करोड़ बनाये, हजार करोड़ बनाये... लेकिन और नोचो, और नोचो...। तबीयत खराब हो रही है, बुद्धि खराब हो रही है। हृदयाघात हो रहा है, बेटा ऐसा हो रहा है, बेटी ऐसी हो रही है, जमाइयों का ऐसा हो रहा है लेकिन खपे-खपे (चाहिए-चाहिए) में वे खपे जा रहे हैं। ऐसे कुएँ में सारे खदबदा रहे हैं। जब गड़रिया ऐसा जवाब देता है तो अध्यात्मबल की कैसी बलिहारी है !

ज्ञान गंगोत्री

शिष्य को जोड़े सद्गुरु से : संप्रेषण शक्ति

शरीर का श्रृंगार तो रात्रि को बिखर जाता है लेकिन अपने 'मैं' का श्रृंगार तो मौत के बाद भी सुवास देता है । जैसे शबरी का शरीर तो मर गया लेकिन उसके श्रृंगार की सुवास अभी भी है। कई बार शिष्यों को सपने में गुरु प्रेरणा देते हैं। कई बार ध्यान में प्रेरणा देते हैं। कई बार भावों से भरा हुआ शिष्य जो कहता है वैसा हो जाता है अथवा जो होनेवाला होता है, शिष्य को पूर्व-सूचना मिल जाती है। ऐसी-ऐसी गुरु-शिष्यों के संबंधों की कई ऐतिहासिक गाथाएँ हैं। ये घटनाएँ 'संप्रेषण शक्ति' के प्रभाव से होती हैं।

संप्रेषण शक्ति का आभास तब होता है जब शिष्य मनोमय और विज्ञानमय शरीर में पहुँचता है । अन्नमय शरीर (स्थूल शरीर) और प्राणमय शरीर से तो वह आता है लेकिन गुरु के सान्निध्य में एकाकार होकर शिष्य मनोमय और विज्ञानमय शरीर में पहुँचता है।

संप्रेषण शक्ति का माध्यम : गुरुमंत्र

जैसे मोबाइल फोन के टावर से तुम्हारे मोबाइल में ध्वनि की विद्युत चुम्बकीय तरंगें आती हैं तो बीच में सिम कार्ड की व्यवस्था है, ऐसे ही **गुरु और ईश्वर की अध्यात्म-शक्ति की तरंगें जिस सिम कार्ड से शिष्य के अंदर संचार करती हैं उसका नाम है गुरुमंत्र ।** सिम कार्ड तो एक्सपायर हो जाता है और मनुष्य का बनाया हुआ है लेकिन मंत्र मनुष्य का बनाया हुआ नहीं है। ऋषि मंत्र के द्रष्टा हैं, ऋषियों ने भी नहीं बनाया है । गुरु जब मंत्र देते हैं तो मनोमय और विज्ञानमय शरीर के साथ आत्मिक स्तर पर गुरु-शिष्य का संबंध हो जाता है । मंत्र एक माध्यम बन जाता है, जोड़ देता है गुरु की शक्ति के साथ। गुरु मंत्रदीक्षित साधक को संप्रेषित कर देते हैं । बौद्धिक प्रदूषणों से दूर कर देते हैं। उसके द्वारा कोई गलती होती है तो तुरंत उसको एहसास होता है। जो निगुरा है वह गलत करेगा तो भी उसे गलती नहीं लगेगी। सगुरा गलत करेगा तो उसको गलती दिखेगी, उसकी बुद्धि में गुरुमंत्र का प्रकाश है । गुरुमंत्र के प्रकाश से चित्त ऐसा प्रकाशित होता है कि विज्ञान की वहाँ दाल नहीं गलती । विश्लेषण, गणित और आधुनिक विज्ञान से यह अलग प्रकाश है।

जैसे पयहारी बाबा को पृथ्वीराज चौहान ने कहा कि "मैं आपको द्वारिका ले जाऊँगा।"

वे बोले : "तू क्या ले जायेगा ! मैं तुझे ले जाऊँगा।"

बाबा रात को पृथ्वीराज चौहान के कमरे में प्रकट हो गये। पृथ्वीराज चौहान (शेष पृष्ठ २७ पर)

शास्त्रावलोकन

शिष्यत्व की कसौटी

एक दिन गुरु द्रोणाचार्यजी शिष्यों के साथ गंगाजी में स्नान करने गये । जैसे ही उन्होंने गंगा में गोता लगाया, अचानक एक मगरमच्छ ने उनके पैर की पिंडली पकड़ ली ।

गुरु तो सर्वसमर्थ होते हैं लेकिन समाज को सीख देने अथवा तो शिष्यों की परीक्षा के लिए वे कभी-कभी अनोखी लीलाएँ करते हैं । वे बाहर से हड़बड़ाने की लीला करके शिष्यों को आवाज लगाने लगे : ''बचाओ... बचाओ... इस ग्राह से मेरी रक्षा करो ।''

सभी हक्के-बक्के से होकर एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे कि 'क्या करें ? कैसे गुरुजी को बचायें ?' तभी सहसा उनकी आँखों के सामने से एक के बाद एक पाँच बाण गुजरे और देखते-ही-देखते उन बाणों ने पानी के भीतर ही ग्राह के शरीर को छलनी कर दिया ।

सब इधर-उधर देखने लगे कि आखिर किसने बाण चलाये ? देखा तो अर्जुन कुछ ही दूरी पर हाथों में धनुष-बाण लिये ग्राह पर निशाना साधकर खड़ा था । गुरुजी ने धनुर्विद्या तो सभीको सिखायी थी पर अर्जुन ने कुशलता व तत्परतापूर्वक गुरुजी द्वारा सिखायी गयी विद्या को सिद्ध कर लिया ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''तुम्हारे बाह्य प्रणाम, पूजा, सत्कार और वस्तुएँ गुरु को वह प्रसन्नता नहीं देंगी, जो प्रसन्नता आप उनकी बतायी हुई ज्ञान की कुंजियाँ आजमाकर अपने को ऊँचा उठा लेते हो तब होती है ।''

द्रोणाचार्य अर्जुन पर अत्यंत प्रसन्न हुए । उन्होंने उसे तीनों लोकों में असाधारण तथा सब अस्त्रों से बढ़कर प्रभाववाला 'ब्रह्मशिर' नामक अस्त्र प्रदान किया और आशीर्वाद देते हुए बोले : ''बेटा अर्जुन ! तुमने अपनी दृढ़ निष्ठा, सेवा में तत्परता और अभ्यास में लगन के प्रभाव से धनुर्विद्या में श्रेष्ठता सिद्ध कर दी है । तुम्हारे समान संसार में दूसरा कोई धनुर्धर नहीं होगा ।''

जैसे-जैसे गुरु के प्रति अहोभाव व समर्पण बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे शिष्य की योग्यता विकसित होती जाती है और गुरुजी की गूढ़ से गूढ़तम विद्याओं के रहस्यों को वह समझ पाता है । और यदि गुरु ब्रह्मज्ञानी हैं तो शिष्य परम लक्ष्य परमात्मप्राप्ति को भी हासिल कर सकता है ।

अभ्यास में अपार शक्ति होती है । अभ्यास इस बात का करना है कि मित्र और शत्रु में जो चेतन चमक रहा है उसका बार-बार स्मरण होता रहे । आज जो असाध्य है, वही अभ्यास-बल से सरल और सुगम हो सकता है ।जब आप सायकल चलाना सीख रहे थे, उस समय यदि सोच लिए होते कि आप नहीं चला पायेंगे या गिर जायेंगे तो क्या आप कुशल सायकल सवार बन पाते ? सायकल चलाना सीखते वक्त आप शरीर को मोड़ते - झकझोरते हैं, कभी गिरते हैं, छोटी-मोटी चोट भी खा लेते हैं । आखिर सायकल चलाना सीख ही जाते हैं फिर तो स्कूटर भी चला लेते हैं, कार भी चला लेते हैं । यह सब अभ्यास का ही तो प्रभाव है ।

अभ्यास-बल से दुबला-पतला आदमी भी विशालकाय लोहे की मशीनें चला लेता है, लकड़ी की अनेकानेक वस्तुएँ एवं गृहोपयोगी उपकरण बना लेता है, नौका को पानी में दौड़ा लेता है, हवाई जहाज को हवा में उड़ा लेता है । अभ्यास में ऐसी अपार शक्ति है तो आप इस अभ्यास के द्वारा अपने मन को मनोवांछित दिशा क्यों नहीं प्रदान करते हैं ? मन तो हमारा आपका अपना है, गुलाम है । जब लोहे, लकड़ी एवं सभी भौतिक वस्तुएँ आपके एक इशारे की कायल हैं, तब तो मन पर वश पा लेना आपके लिए अत्यधिक सहज बन जाना चाहिए । ईश्वरीय सृष्टि में हमें दस दासियों के साथ एक मुनीम हमारे हवाले किया गया है । पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ ये दस हमारी दस दासियाँ है । इन दस दासियों को चलाने वाला मुनीम मन है । मन रूपी मुनीम से हम गलत काम कराने लगेंगे तो वह हमारे सिर पर चढ़ बैठेगा ।

पुण्यों का संचयकाल : चतुर्मास

(१९ जुलाई से १४ नवम्बर)

('पद्म पुराण' व 'स्कंद पुराण' पर आधारित)

आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक भगवान विष्णु योगनिद्रा द्वारा विश्रांतियोग का आश्रय लेते हुए आत्मा में समाधिस्थ रहते हैं । इस काल को 'चतुर्मास' कहते हैं । इस काल में किया हुआ व्रत-नियम, साधन-भजन आदि अक्षय फल प्रदान करता है।

चतुर्मास के व्रत-नियम

(१) गुड़, ताम्बूल (पान या बीड़ा), साग व शहद के त्याग से मनुष्य को पुण्य की प्राप्ति होती है। (२) दूध-दही छोड़नेवाले मनुष्य को गोलोक की प्राप्ति होती है। (३) पलाश के पत्तों में किया गया एक-एक बार का भोजन त्रिरात्र व्रत (तीन दिन तक का उपवास कर किया गया व्रत) व चांद्रायण व्रत (चंद्रमा की एक कला हो तब एक कौर इस प्रकार रोज एक-एक बढ़ाते हुए पूनम के दिन १५ कौर भोजन लें और फिर उसी प्रकार घटाते जायें) के समान पुण्यदायक और बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाला है। (४) पृथ्वी पर बैठकर प्राणों को ५ आहुतियाँ देकर मौनपूर्वक भोजन करने से मनुष्य के ५ पातक निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। (५) पंचगव्य का पान करनेवाले को चान्द्रायण व्रत का फल मिलता है। (६) चौमासे में भूमि पर शयन करनेवाले मनुष्य को निरोगता, धन, पुत्रादि की प्राप्ति होती है। उसे कभी कोढ़ की बीमारी नहीं होती।

उपवास का लाभ

चतुर्मास में रोज एक समय भोजन करनेवाला पुरुष अग्निष्टोम यज्ञ का फल पाता है। चतुर्मास में दोनों पक्षों (कृष्ण व शुक्ल पक्ष) की एकादशियों का व्रत व उपवास महापुण्यदायी है।

त्यागने योग्य

(१) सावन में साग, भादों में दही, आश्विन में दूध तथा कार्तिक में दाल व करेला का त्याग।

(२) काँसे के बर्तनों का त्याग।

(३) विवाह आदि सकाम कर्म वर्जित हैं।

चतुर्मास में परनिंदा का विशेष रूप से त्याग करें। परनिंदा महान पाप, महान भय व महान दुःख है। परनिंदा सुननेवाला भी पापी होता है।

जो चतुर्मास में भगवत्प्रीति के लिए अपना प्रिय भोग यत्नपूर्वक त्यागता है, उसकी त्यागी हुई वस्तुएँ उसे अक्षयरूप में प्राप्त होती हैं।

ब्रह्मचर्य का पालन करें

चतुर्मास में ब्रह्मचर्य-पालन करनेवाले को

ते सुमतिर्भूत्वस्मे। 'हे प्रभो ! वेद में उपदिष्ट आपकी कल्याणकारिणी शुभ मति हममें सदा बनी रहे।' (सामवेद)

स्वर्गलोक की प्राप्ति तथा असत्य-भाषण, क्रोध एवं पर्व के अवसर पर मैथुन का त्याग करनेवाले को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

जप एवं स्तोत्रपाठ का फल

जो चतुर्मास में भगवान विष्णु के आगे खड़ा होकर 'पुरुष सूक्त' का पाठ करता है, उसकी बुद्धि बढ़ती है ('पुरुष सूक्त' के लिए पढ़ें ऋषि प्रसाद, जुलाई २०१२)। चतुर्मास में **'नमो नारायणाय'** का जप करने से सौ गुने फल की प्राप्ति होती है तथा भगवान के नाम का कीर्तन और जप करने से कोटि गुना फल मिलता है।

स्नान व स्वास्थ्य-सुरक्षा

चतुर्मास में प्रतिदिन आँवला रस मिश्रित जल से स्नान करने से नित्य महापुण्य की प्राप्ति होती है। बाल्टी में १-२ बिल्वपत्र डाल के **'ॐ नमः शिवाय'** का ४-५ बार जप करके स्नान करने से वायु-प्रकोप दूर होता है, स्वास्थ्य-रक्षा होती है।

साधना का सुवर्णकाल

चतुर्मास साधना का सुवर्णकाल माना गया है। जिस प्रकार चींटियाँ वर्षाकाल हेतु इससे पहले के दिनों में ही अपने लिए उपयोगी साधन-संचय कर लेती हैं, उसी प्रकार साधक को भी इस अमृतोपम समय में पुण्यों की अभिवृद्धि कर परमात्म-सुख की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

चतुर्मास में शास्त्रोक्त नियम-व्रत पालन, दान, जप-ध्यान, मंत्रानुष्ठान, गौ-सेवा, हवन, स्वाध्याय, सत्पुरुषों की सेवा, संत-दर्शन व सत्संग-श्रवण आदि धर्म के पालन से महापुण्य की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य नियम, व्रत अथवा जप के बिना चौमासा बिताता है, वह मूर्ख है। चतुर्मास का पुण्यलाभ लेने के लिए प्रेरित करते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''तुम यह संकल्प करो कि यह जो चतुर्मास शुरू हो रहा है, उसमें हम साधना की पूँजी बढ़ायेंगे। यहाँ के रुपये तुम्हारी पूँजी नहीं हैं, तुम्हारे शरीर की पूँजी हैं। लेकिन साधना तुम्हारी पूँजी होगी, मौत के बाप की ताकत नहीं जो उसे छीन सके !

चतुर्मास में कोई अनुष्ठान का नियम अथवा एक समय भोजन और एकांतवास का नियम ले लो। कुछ समय 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' या 'ईश्वर की ओर' पुस्तक पढ़ने अथवा सत्संग सुनने का नियम ले लो। इस प्रकार अपने सामर्थ्य के अनुसार कुछ-न-कुछ साधन-भजन का नियम ले लेना। जो घड़ियाँ बीत गयीं वे बीत गयीं, वापस नहीं आयेंगी। जो साधन-भजन कर लिया सो कर लिया। वही असली धन है तुम्हारा।''

चतुर्मास सब गुणों से युक्त समय है। अतः इसमें श्रद्धा से शुभ कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए। साधकों के लिए आश्रम के पवित्र वातावरण में मौन-मंदिरों की व्यवस्था भी है।

मनुष्य में कर्म करने की शक्ति तो विपुल है मगर कर्म करने का तरीका वह नहीं जानता तो फिर उन कर्मों के द्वारा बँध जाता है। हमें कर्म करने का सही तरीका अगर आ जाय तो कर्म के द्वारा हम मुक्त हो सकते हैं। विद्युत का हम सदुपयोग करते हैं तो प्रकाश, पंखा, फ्रीज, लीफ्ट आदि से हमारा दैनिक व्यवहार चलता है मगर गलती से कहीं प्लग में ऊँगली डाल दे तो वह मृत्यु दे सकती है।

उत्कृष्ट कर्म करने की कूँजी यह है कि कर्म करने की रुचि हो। जिसके लिए कर्म कर रहे हो उसके प्रति प्रेम हो और कर्म के फल को तुच्छ विकारों में नाश न करके अविनाशी आत्मा की जागृति हो, जीवन ऊर्ध्वगामी हो। कर्म-फल की लोलुपता हृदय को कुंठित न करे यह सावधानी रहे। तो कर्म आत्मसिद्धि बनानेवाला होता है। उससे बढ़कर और कोई उपलब्धि नहीं है।

समाज के तेजस्वी होने और न होने में यही कारण है। जा समाज और लोग निस्तेज हैं वे कर्म में रुचि नहीं रखते और जिनके लिए कर्म करते हैं उनके लिए प्रेम नहीं रखते। इसलिए वह व्यक्ति और समाज निस्तेज रहते हैं। उनके जीवन में रस नहीं होता। जीवन में संगीत नहीं गूंजता और जीवन शुष्क हो जाता है।

सद्गुरु की प्रसन्नता कैसे पायें ?

- पूज्य बापूजी

शरणागत होना माने गुरु-तत्त्व के, गुरुदेव के विचारों तथा उनके अनुभव के अनुगामी होकर उनके अनुसार चलना। श्रोत्रिय, ब्रह्मवेत्ता सच्चे गुरुओं को तुम्हारी बाह्य वस्तुओं की इतनी आवश्यकता नहीं होती। तुम्हारे बाह्य प्रणाम, पूजा-सत्कार और वस्तुएँ उन्हें वह प्रसन्नता नहीं देंगी, जो प्रसन्नता तुम्हारे उनके बताये हुए मार्ग का अनुगामी होकर चलने पर उन्हें होती है। और ब्रह्मवेत्ता की प्रसन्नता प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण है। गुरु की प्रसन्नता हासिल करना, समझो ईश्वर के आनंद-माधुर्य में, ईश्वर-सुख में प्रतिष्ठित होना है।

तो वे महापुरुष कैसे प्रसन्न होते हैं ? महापुरुषों को अपना अनुभवगम्य सिद्धांत जितना प्यारा होता है, वैसी तो अपनी देह भी प्यारी नहीं होती। अपने सिद्धांत के लिए सुकरात व मंसूर ने अपनी देह की बलि दे दी। तो महापुरुष निर्देश करते हैं अपने सिद्धांत में, अपने परमात्म-तत्त्व में, वर्तमान में ठहरने का। आप अगर ठहरने को तत्पर हैं तो आप उनको प्रसन्न कर लेंगे। आप उनके बताये हुए तरीके आजमाकर अपने को ऊँचा उठा लेंगे तो वे आपको सदा प्रसन्न मिलेंगे। और यदि आप जान-बूझकर भी अपनी पुरानी आदत की धारा में बहने लगोगे तो उस वक्त जो गुरु, गुरुमंत्र और गुरु-तत्त्व तुम्हारे हृदय में होता है, वह तुम्हें थामता है, रोकता है, संकेत करता है। **जब तक तुम तुम्हारे गुरु बनकर अपनी कच्चाइयों को निकालने को नहीं डटते हो, तब तक जीवन का दीया जगमगाता नहीं।** और ज्यों-ज्यों तुम अपनी कमजोरियों को निकालकर आगे बढ़ते हो, त्यों-त्यों गुरु तुम्हें तुम्हारे इर्दगिर्द विस्तृत मिलेंगे।

कभी-कभी जब एकांत में गुरु की उदारता का सूक्ष्म दृष्टि का स्मरण होता है तो हृदय कह उठता है :

''हे गुरुदेव ! ईश्वर ने तो हमें संसार में भेजा काम, क्रोध सहित लेकिन आपने निष्कामी बनाया और क्रोध से छुड़ाया । ईश्वर ने तो कर्मों के बंधन में भेजा परंतु गुरुदेव ! आपने उन कर्मबंधनों को काट दिया । प्रकृति ने तो बंधन बनाये लेकिन गुरुदेव ! आपने हमारे लिए मोक्ष बनाया । संसार ने ये चिंताएँ दी लेकिन आपने हमें आनंद दिया । कुटुंबी-संबंधियों ने हमारे लिए जिम्मेदारियाँ बनाईं मगर आपने हमें सारी जिम्मेदारियों से पार कर अपने शुद्ध स्वरूप में स्थिति दिला दी । हे मेरे गुरुदेव ! प्रकृति ने जन्म-मरण बनाया, परंतु आपने तो मोक्ष बनाकर हमारा कल्याण ही कर दिया । हजारों-हजारों जन्मों के माता-पिता हमें जो चीज न दे पाये, लाखों-लाखों मित्र हमें जो चीज न पाये, करोड़ों-करोड़ों जन्मों के परिश्रम से जो चीज हमें न मिल पाई, हे गुरुदेव ! आपके मानसिक सान्निध्य से, आपकी शारीरिक निकटता से और बौद्धिक प्रेरणा से वह चीज हमें मिली है । अब हमें इन्द्र का पद भी छोटा लगता है । गुरु महाराज ! आपके चरणों में कोटि कोटि प्रणाम हो । आप जहाँ भी, जिस रूप में भी हमारा जैसा भी उपयोग करना चाहें, यह तन, मन, बुद्धि आपके हवाले हैं । फिर-फिर से आपके चरणों में हजारों प्रणाम हो ।''

संस्कृति दर्शन

जो सद्गुरु से करता तादात्म्य विश्व गाता उसका माहात्म्य

- पूज्य बापूजी

रोम के बादशाह ने सोने की सलाई और सोने-चाँदी व रत्नों से जड़ित डिब्बी में दो आँखों में लगा सकें इतना सुरमा भारत के राजा को भेजा और कहलवाया कि 'कोई भी अंधा आदमी अगर इस सुरमे को लगायेगा तो वह देखने लग जायेगा ।' वह भारत के राजा की परीक्षा लेना चाहता था कि 'भारत के चक्रवर्ती राजा और उनके मंत्रियों की सूझबूझ अगर ऊँची है तो हम रोम के लोग उनसे मैत्री करेंगे और अगर उनकी सूझबूझ छोटी है तो हम उन पर चढ़ाई करके उन्हें हरायेंगे । रोम के दूत ने भारत के राजा को सुरमे की महिमा सुनाकर डिब्बी सादर अर्पण की । राजा बड़ा खुश हुआ कि 'मेरा खास, ईमानदार, दूरदर्शी प्रधानमंत्री जिसके विचारों के कारण मैं कई जगहों पर विजयी हुआ हूँ, उसकी अंध बनी आँखें वापस देखने लग जायें यह मेरा कर्तव्य है।'

यदि कोई अधिकारी राजा या नेता के प्रति वफादार है तो राजा या नेता का भी कर्तव्य है कि उस अधिकारी का भविष्य उज्ज्वल हो।

राजा ने अपना कर्तव्य निभाया और अपने खास मंत्री को बुलाकर कहा : ''लो, आज मैं मेरे दायें हाथस्वरूप मंत्री की सेवा करने में सफल हो रहा हूँ ।'' उसको सुरमे की महिमा बताकर बोला : ''जल्दी करो, तुम देखने लग जाओगे।''

मंत्री ने तनिक शांत होकर, जो गुरु ने बताया था उस तालबद्धता का, श्वास का, जप का अनुसंधान करके एक सलाई दायीं आँख में आँजी और वह देखने लग गया। उसके चेहरे पर खुशी की लहर तो नहीं दौड़ी लेकिन जिज्ञासा की गम्भीरता आ गयी कि 'यह सुरमा तो मात्र दो आँखों के लिए ही है परंतु मेरे जैसे तो राज्य में और कई अंधे होंगे !

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।

हे गुरुदेव ! इस सुरमे को बनाते समय क्या-क्या भावना दी गयी है ?' इस प्रकार उसने अपने गुरु के आत्मा के साथ, गुरु के चित्त के साथ तादात्म्य किया तथा फिर दूसरी सलाई दूसरी आँख में डालने की जगह अपनी जिह्वा पर घुमा दी और तनिक शांत हो गया। वह समझ गया कि सुरमा घोटते समय किस-किस मिश्रण की भावना दी गयी है - गुलाब के अर्क की, इन्द्रवर्णा की, देशी गाय का पुराना घी आदि-आदि की। उसके चेहरे पर गम्भीर प्रसन्नता छा गयी । युद्ध के मैदान में विजेता की क्या खुशी है, उससे भी बड़ी दिव्य, आत्मिक खुशी !

मंत्री बोला : ''राजन् ! अब १-२ आदमियों की आँखें नहीं, राज्य में जिनकी आँखों का पानी सूख गया है या जो नहीं देख सकते हैं उन सभीकी खोयी हुई आँखें वापस आ जायेंगी।''

''अरे, यह सब क्या बातें करता है भावुकता की ? अब एक आँख में तो आँजा, दूसरी आँख का सुरमा तुम जिह्वा पर चाटने लग गये ! लोग तुमको काना बोलेंगे। मेरा मंत्री काना रहे ! मुझे दुःख दिया तुमने।''

''नहीं महाराज ! मैंने आपको दुःख नहीं दिया, मैं आपको गजब की खुशी दूँगा कि इस सुरमे में क्या-क्या वस्तु पड़ी है,

वह मुझे अंतर्प्रेरणा हो गयी है। स्वाद से भी और अंतरात्मा से भी, दोनों की सहमति हो गयी है। मैं इस दूत को आपके सामने कहता हूँ कि इस डिब्बी में तुम लाये थे जरा-सा सुरमा लेकिन अब यह डिब्बी मैं तुमको भर के दूँगा और रोम-नरेश को बोलना कि पूरे रोम अथवा विश्व के जितने भी आदमी अंधे हों, उनकी आँखों के लिए आप सुरमा भारत से मँगवा लिया करना। सुरमे में क्या-क्या है वह सब मुझे पता चल गया है।''

जब रोम-नरेश से दूत ने सारी बात कही तो वह गद्गद हो गया और कहा : ''जिसके राज्य में प्रकृति से तालमेल तथा प्रकृति की गहराई में परमात्मा से तालमेल और श्वासोच्छ्वास की तालबद्धता जाननेवाले मंत्री हैं, ऐसे राज्य पर चढ़ाई करना महँगा सौदा है। हम भारत-नरेश के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ायेंगे।''

****

(पृष्ठ २१ से '' शिष्य से जोड़े...'' का शेष) को द्वारिकाधीश का दर्शन करा के सुबह होने के पहले अपने कमरे में पहुँचा दिया। यहाँ विज्ञान तौबा पुकार जायेगा। मेरे गुरुजी कहीं होते और मुझे महसूस होता कि गुरुजी मुझे याद करके कुछ दे रहे हैं, तुरंत पता चल जाता। ऐसे ही कोई शिष्य याद करता है तो गुरु के चित्त में उसका स्फुरण हो जाता है।

यह जो गुरुओं की परम्परा है और संप्रेषण शक्ति से रूपांतरण है, वह और किसी साधन से नहीं हो सकता है। संत तुलसीदासजी कहते हैं : **यह फल साधन ते न होई।**

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मंगलम् ।

परम मंगल तो गुरु की कृपा से ही होता है, बिल्कुल पक्की बात है।

मेरा तो क्या, मेरे जैसे अनेक संतों का अनुभव है।

सपने में गुरुदर्शन देता अद्भुत संकेत

सपने में सिर पर गुरुजी हाथ रख रहे हैं तो यह समझ लेना कि गुरुजी का आशीर्वाद आया है। सपने में गुरुजी से बात कर रहे हैं तो समझो गुरुजी सूझबूझ का धन देना चाहते हैं। सपने में गुरुजी को हम स्नेह कर रहे हैं तो प्रेमाभक्ति का प्रकाश होनेवाला है। अगर आप सपने में चाहते हैं कि हमारे सिर पर गुरुजी हाथ रखें तो आपके अंदर आशीर्वाद पचाने की क्षमता आ रही है। यह इसका गणित है। अगर आपकी आँखें गुरुजी सपने में बंद कर देते हैं तो आपको स्थूल दृष्टि से पार सूक्ष्म दृष्टि गुरुजी देना चाहते हैं। सपने में गुरुजी तुमसे या किसीसे बात करते हुए दिखते हैं तो मानो तुम पर बरसना चाहते हैं।

भक्ति आरम्भ में मंदिर, गिरजाघर, पूजा-स्थल पर होती है लेकिन सच्ची भक्ति सद्गुरु की दीक्षा के बाद शुरू होती है। उसके पहले तो के.जी. में सफाई करना होता है।

उत्तम संतानप्राप्ति के लिए

५ जनवरी २०१४ से १८ सितम्बर २०१४ तक का समय गर्भाधान के लिए अति उत्तम है।

****

तुम यदि मुसीबत में, आपत्ति में फँसे हुये हो तो गुण्डों के आधीन मत होना । उनसे हारकर दब मत जाना । सर्वेश्वर जो परमात्मा है उसीकी शरण में जाना । वे गुण्डों को भी सद्बुद्धि देंगे, तुमको बचायेंगे, कल्याण करेंगे ।''

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे आत्मज्ञानी महापुरुषों के जीवन की कुछ पहचानें दी जा रही हैं । उनके आधार पर उन महापुरुषों के नाम वर्ग-पहेली में से खोजिये ।

त	श्वा	साँ	त्म	जी	व	दे	म	ना	त	सं	रु
द	क्षि	त्सं	ई	ई	शा	वि	प	स	सं	त	घ
र	श	री	म	ली	र	रा	सा	त	त्य	ए	ना
मी	फा	ह	प	त्रि	ला	क	आ	र	आ	क	दा
क	रा	श	रा	जा	दा	शा	नि	जी	ष्ठ	ना	र
पा	बी	बा	जी	म	रा	का	ह	दी	बा	थ	म
ल	शा	र	र	म	त्म	न्द	ड़ा	जी	रो	जी	ला
ना	सा	व	जी	न्ना	वि	र्य	डा	पो	रा	गु	बा
ध्या	नं	बा	य	र	चा	ध्या	बा	र	ण	पा	ड
ज	पू	ड़	अ	का	शि	व	फा	आ	ल	र	फू
स	वृ	गी	ट	ग	शा	ति	भ	त	स	प	पू
गी	यो	तो	ग	व	न्ना	म	ज	प	री	ब	श

(१) अनपढ़ दादी से बचपन में
सुना था ऊँचा ज्ञान ।
गुरुसेवा में दृढ़ रहकर २० वर्ष में पाया ब्रह्मज्ञान ॥

(२) गुरु ने श्रीचरणों में बुलाया,
पंचदशी सत्संग सुनाया ।
२३ वर्ष की अल्पायु में,
ब्रह्मस्वरूप का ज्ञान पाया ॥

(३) गुरुचरणों के स्पर्श से मिली मंत्रदीक्षा ।
गुरु रीझे तब पायी अद्वैत पूर्ण शिक्षा ॥

(४) ८० वर्ष की उम्र हुई पर
गुरुआज्ञा का आदर किया ।
गुरु को सदा प्रत्यक्ष मानकर रामतत्त्व को पा लिया ॥

(५) गुरुसंकल्प प्रभाव से मूर्ख हुआ विद्वान । गाते हुए सुना दिया अनपढ़े शास्त्रों का ज्ञान ॥

(६) आज्ञा पाकर शव को खाने
निकले दो गुरुभक्त महान ।
गुरुनिष्ठा के प्रताप से, पाया पूर्ण तत्त्व का ज्ञान ॥

(७) सात दिन की तीव्र तड़प ने मिटा दिया अज्ञान ।
गुरुचरणों में बैठ गया तो शाप भी बन गया वरदान ॥

(८) पूरणपूड़ी खाता था, सद्गुरु नाम था मंत्र ।
अनपढ़ था पर गुरुकृपा से, पूर्ण किया अधूरा ग्रंथ ॥

(९) संतों ने कच्चा घड़ा बताया,
रोते-रोते विठ्ठल मंदिर आया ।
विठ्ठल ने गुरुदर पहुँचाया, गुरु ने आत्मशिव लखाया ॥

(१०) रातभर किया जागरण, पकड़ी पाई की भूल ।
गुरुसेवा-गुरुभक्ति से नष्ट हुआ,
अज्ञान-अंधकार का मूल ॥

गतांक की 'ढूँढ़ो तो जानें' वर्ग-पहेली के उत्तर

(१) मीराबाई (२) मदालसा (३) अंजना (४) सावित्री (५) अनसूया (६) सीता (७) गार्गी (८) कुंती (९) द्रौपदी (१०) माँ महँगीबा

साधक ऐसा चाहिए, जा के ज्ञान विवेक ।
बाहर मिलता सों मिले अंदर सब सों एक ॥

साधक बाहर मिलने-जुलने में सबसे ठीक तरह मिले, मगर अंदर में समझे कि यह सब सपना है । यह सब आने जानेवाली परिस्थितियाँ हैं । मेरा मिलनेवाला तो मेरा कृष्णतत्त्व, मेरा रामतत्त्व, मेरा गुरुतत्त्व , मेरा आत्मदेव है । ऐसा अगर सजगता से भान रहे तो भय, राग, क्रोध क्षीण होते जायेंगे ।

जितनी जितनी नश्वर वस्तुओं की आस्था मिटती जायेगी उतने भय, राग, क्रोध दूर होते जायेंगे...उतना ही व्यक्ति 'मन्मया' होता जायेगा ।

पर्व मांगल्य

दुर्भाव हटाये, सद्भाव जगाये नागपंचमी

(नागपंचमी : ११ अगस्त)

श्रावण शुक्ल पंचमी को नागपंचमी का पर्व मनाया जाता है। यह नागों की पूजा का पर्व है। मनुष्यों और नागों का संबंध पौराणिक कथाओं में झलकता रहा है । शेषनाग के सहस्र फनों पर पृथ्वी टिकी है, भगवान विष्णु क्षीरसागर में शेषशय्या पर सोते हैं, शिवजी के गले में सर्पों के हार हैं, कृष्ण-जन्म पर नाग की सहायता से ही वसुदेवजी ने यमुना पार की थी । जनमेजय ने पिता परीक्षित की मृत्यु का बदला लेने हेतु सर्पों का नाश करनेवाला जो सर्पयज्ञ आरम्भ किया था, वह आस्तीक मुनि के कहने पर इसी पंचमी के दिन बंद किया था। यहाँ तक कि समुद्र-मंथन के समय देवताओं की भी मदद वासुकि नाग ने की थी। अतः नाग देवता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है - नागपंचमी।

श्रावण मास में ही क्यों मनाते हैं नागपंचमी

वर्षा ऋतु में वर्षा का जल धीरे-धीरे धरती में समाकर साँपों के बिलों में भर जाता है। अतः श्रावण मास के काल में साँप सुरक्षित स्थान की खोज में बाहर निकलते हैं। सम्भवतः उस समय उनकी रक्षा करने हेतु तथा उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु एवं सर्पभय व सर्पविष से मुक्ति के लिए हमारी भारतीय संस्कृति में इस दिन नागपूजन, उपवास आदि की परम्परा रही है।

सर्प हैं खेतों के 'क्षेत्रपाल'

भारत देश कृषिप्रधान देश है। साँप खेतों का रक्षण करते हैं, इसलिए उसे 'क्षेत्रपाल' कहते हैं। जीव-जंतु, चूहे आदि जो फसल का नुकसान करनेवाले तत्त्व हैं, उनका नाश करके साँप हमारे खेतों को हराभरा रखते हैं। इस तरह साँप मानव-जाति की पोषण-व्यवस्था का रक्षण करते हैं। ऐसे रक्षक की हम नागपंचमी को पूजा करते हैं।

कैसे मनाते हैं नागपंचमी

इस दिन कुछ लोग उपवास करते हैं। नागपूजन के लिए दरवाजे के दोनों ओर गोबर या गेरुआ या ऐपन (पिसे हुए चावल व हल्दी का गीला लेप) से नाग बनाया जाता है। कहीं-कहीं मूँज की रस्सी में ७ गाँठें लगाकर उसे साँप का आकार देते हैं। पटरे या जमीन को गोबर से लीपकर, उस पर साँप का चित्र बना के पूजा की जाती है। गंध, पुष्प, कच्चा दूध, खीर, भीगे चने, लावा आदि से नागपूजा होती है। जहाँ साँप की बाँबी दिखे, वहाँ कच्चा दूध और लावा चढ़ाया जाता है। इस दिन सर्प-दर्शन बहुत शुभ माना जाता है।

नागपूजन करते समय इन १२ प्रसिद्ध नागों के नाम लिये जाते हैं - धृतराष्ट्र, कर्कोटक, अश्वतर, शंखपाल, पद्म, कम्बल, अनंत, शेष, वासुकि, पिंगल, तक्षक, कालिय और इनसे अपने परिवार की रक्षा हेतु प्रार्थना की जाती है। इस दिन सूर्यास्त के बाद जमीन खोदना निषिद्ध है।

नागपंचमी का सद्भावना संदेश

यह उत्सव प्रकृति-प्रेम को उजागर करता है । हमारी भारतीय संस्कृति हिंसक प्राणियों में भी अपना आत्मदेव निहारकर सद्भाव रखने की प्रेरणा देती है। नागपंचमी का यह उत्सव नागों की पूजा तथा स्तुति द्वारा नागों के प्रति नफरत व भय को आत्मिक प्रेम व निर्भयता में परिणत करने का संदेश देता है।

गुरु बिन कौन उतारे पार ?

सद्गुरु निराकार के साकार रूप हैं। पूर्ण साधु नर-हरि या हरि-नर होते हैं। वे एक ही समय में मनुष्य के स्तर पर भी होते हैं और साथ ही परमात्मा के स्तर पर भी । इसलिए केवल वे ही जीवात्मा को मनुष्य के स्तर से परमात्मा के स्तर पर ले जा सकते हैं। **- संत चरनदासजी**

सद्गुरु की तुलना ईश्वर से भी नहीं हो सकती । सद्गुरु का सामर्थ्य अधिक है । उनके सामने ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि कोई चीज नहीं। जो शिष्य गुरु के वचनों में दृढ़ भाव रखता है, वह स्वयं देवाधिदेव (सद्गुरु) बन जाता है। **- समर्थ रामदासजी**

चाहे प्रकृति में परिवर्तन हो जाय और सूर्य तपना छोड़ दे, चंद्रमा शीतलतारहित हो जाय, जल बहना त्याग दे, दिन की रात और रात का दिन क्यों न हो; एक बार हुई गुरुकृपा व्यर्थ नहीं जाती। यह कृपा शिष्य के साथ-साथ जन्म-जन्मांतरों में भी रहती है। इसीलिए आप धैर्य से, उत्साह से, प्रेम से अभ्यास करते रहें **- स्वामी मुक्तानंदजी**

गुरु-तत्त्व नित्य होता है। जिनसे सत्य-तत्त्व का बोध (ज्ञान) होता है, वे सद्गुरु हैं। तत्त्वज्ञ, जीवन्मुक्त महापुरुष ही सद्गुरु हो सकते हैं।

- स्वामी रामसुखदासजी

पूरे हैं वे मर्द जो हर हाल में खुश हैं । मिला अगर माल तो उस माल में खुश हैं ।।
हो गये बेहाल तो उस हाल में खुश हैं ।।

श्रीकृष्ण को नंगे पैर भागना पड़ा तो धोती के टुकड़े बाँधकर भागे जा रहे हैं । छः महीने गिरनार की गुफाओं में साधुओं के घर प्रसाद पाकर जीना पड़ता है तो जी रहे हैं । कोई फरियाद नहीं । द्वारिकाधीश हो सोने के महलों में रहे तो भी कोई फर्क नहीं । अपने देखते-देखते सर्वस्व डूब रहा है तब भी भीतर में वही समता । श्रीकृष्ण समझते हैं कि यह सब माया है । और हम इसे सत्य समझते हैं । बारिश के दिनों जैसे बादलों में देवताओं की बारात-सी दिखती है, वह बादलों की माया है । ऐसे संसार में जो बारात दिखती है वह विश्वंभर की माया है । श्रीकृष्ण तुम्हें यह बताना चाहते हैं कि माया को माया समझो और चैतन्य स्वरूप को मैं रूप में जन लो तो माया को भी मजा है और अपने आपको भी मजा ही मजा है ।

पीड़ितों की सेवा को आगे आया संत श्री आशारामजी आश्रम

दैनिक **जनवाणी** एक सकारात्मक सोच

देहरादून, २४ जून। केदारनाथसहित उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों में आयी विनाशकारी आपदा के पीड़ितों की मदद को संत श्री आशारामजी बापू का आश्रम आगे आया है। आश्रम द्वारा विभिन्न स्थानों पर लगे राहत शिविरों में हजारों सेवादार पीड़ित यात्रियों को नाश्ता, भोजन, दवाइयाँ और बरसाती मुहैया करा रहे हैं। बापू के ध्येय-वचनों को आगे रखकर सभी स्थानों पर लोगों की सेवा की जा रही है।

हिन्दुस्तान तरक्की को चाहिए नया नजरिया

आशारामजी आश्रम ने लगाया शिविर

ऋषिकेश, २३ जून। संत आशारामजी आश्रम, ऋषिकेश की ओर से आपदा-पीड़ित यात्रियों के लिए सहायता सेवाकेन्द्र खोला गया है। इसमें पीड़ितों को भोजन व चिकित्सा सुविधा मुहैया करायी जा रही है। वाहनों के जरिये भी २४ घंटे विभिन्न मार्गों में यह सेवा जारी है। गौरीकुंड आदि क्षेत्रों में फँसे यात्रियों के लिए खाद्य सामग्री के पैकेट भी भेजे जा रहे हैं। आश्रम द्वारा आपदा-पीड़ितों को हर सम्भव मदद दी जा रही है।

संत श्री आशारामजी आश्रम की ओर से ऋषिकेश में कई जगह खोले गये राहत शिविर

आपदा-पीड़ितों को भेजी सामग्री

हिन्दुस्तान

देहरादून, २४ जून । तीर्थनगरी में विभिन्न स्थानों पर संत श्री आशारामजी आश्रम की ओर से पहाड़ों पर खाद्य सामग्री भेजी जा रही है । ऋषिकेश में बाढ़-प्रभावितों के लिए निःशुल्क वाहन सेवा भी लगायी गयी है । संत श्री आशारामजी आश्रम, ब्रह्मपुरी, ऋषिकेश शाखा की ओर से रविवार को मार्गों पर फँसे यात्रियों के लिए रोटी-सब्जी व नमकीन आदि खाद्य सामग्री के पैकेट तथा दवाइयाँ, बरसाती व पानी की बोतलें भी भेजी गयीं । ऋषिकेश बस स्टैंड पर भी यात्रियों को नाश्ता और भोजन की व्यवस्था की जा रही है तथा एक वाहन निरंतर घूमकर लोगों को चिकित्सा सुविधा भी मुहैया करा रहा है ।

बदरपुर, दिल्ली में बापूजी ने मार्गों पर फँसे लोगों की सलामती के लिए अपने लाखों श्रद्धालुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की ।

आशारामजी बापू ने भेजी राहत सामग्री

देहरादून, २३ जून । संत आशारामजी बापू ने आपदा-राहत सामग्री भेजी है । साथ ही ऋषिकेश में आपदा-पीड़ितों के लिए वाहन सेवा भी शुरू की है ।

कुबेर नगर, अहमदाबाद की निवासी दिव्या गिडवानी अपने माता-पिता के साथ चार धाम यात्रा पर आयी थी । आपदा में उसके माता-पिता का कुछ पता नहीं चल पाया है । आश्रम प्रशासन ने उनके बैंक खाते में हवाई टिकट का पैसा डालकर उन्हें सुरक्षित घर पहुँचा दिया ।

संत महिमा

संत - राष्ट्र के प्राणाधार

- पूज्य बापूजी

कैवर्त राज्य का राजा था तोमराज। पड़ोसी राज्य से आये किसी व्यक्ति का कैवर्त में अपमान हो गया। वह अपने राज्य में जाकर बोला : ''कैवर्त-सम्राट तोमराज के राज्य में हमारे राज्य के नागरिकों का अपमान हो रहा है।''

राजा विश्वजित तक बात पहुँची। राजा ने कहा : ''मेरे राज्य के झाडू लगानेवाले का भी कोई अपमान करेगा तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमारे नागरिक हमारी शान हैं। नागरिक हैं तो राजा है। जब नागरिक का अपमान होता है तो राजा किस काम का ? जाओ सेनापति ! कैवर्त-सम्राट तोमराज के राज्य को घेरा डालो और उस राज्य को परास्त करने का दृढ़ निश्चय करो। जरूरत पड़ी तो मैं भी आ जाता हूँ।''

सेनापति : ''नहीं राजन् ! हम निपटा लेंगे।''

राजा विश्वजित ने सोचा कि 'तोमराज को यूँ जीत लेंगे...' कैवर्त-सम्राट था तो छोटा राजा लेकिन बड़े-में-बड़े जो परमात्मा हैं, उससे मिले हुए संत का भक्त था, शिष्य था। इसलिए विश्वजित को युद्ध जीतना भारी पड़ रहा था, युद्ध में कोई सफलता नहीं मिल रही थी। १ दिन, २ दिन, ३ दिन, ४ दिन बीते... बोले : ''ये तो १ घंटे के ग्राहक थे लेकिन ४-५ दिन हो गये और हमारी सेना मारी जा रही है ! आखिर क्या है ? कुछ भी करो, हमारे नागरिक के अपमान का बदला उस राज्य की मिट्टी पलीत करने से ही होगा।''

सैनिक और तो कुछ कर नहीं पाये लेकिन एक दिन कैवर्त-सम्राट के नागरिक, संत देवलाश्वजी विश्वजित के सैनिक-खेमों के पास से गुजरे तो विश्वजित के सैनिकों ने उनको जासूसी के गुनाह में पकड़ लिया। अब उन संत को तो पता भी नहीं था कि यहाँ से गुजरना है कि नहीं ! जासूस तो थे नहीं लेकिन विश्वजित ने सोचा, 'शत्रु राज्य का नागरिक है न, और उसको हम जीत नहीं सकते हैं तो चलो, उनके एक आदमी को ही फाँसी देकर अपनी जलन निकालें।' वह गुस्से में बोला : ''इनको फाँसी की सजा दी जायेगी !''

नाम तो था विश्वजित लेकिन भीतर से क्रोध के आगे, द्वेष और अहंकार के आगे हारा हुआ था। विश्वजित तो वह है जो सत्संग के द्वारा विकारों को हरा दे, बाकी तो कई विश्वजित पैदा हो के मर गये।

कैवर्त राज्य के लोगों ने सुना कि उनके संत देवलाश्वजी बंदी बनाये गये हैं और उनको फाँसी की सजा सुना दी गयी है। लोगों ने खाना-पीना छोड़ दिया। भगवान को पुकारने लगे : 'हे भगवान ! कुछ भी हो, तुम्हारे प्यारे संत, निर्दोष संत के साथ ऐसा अन्याय न हो !' सम्राट के कान बात गयी। कैवर्त-सम्राट शांत हो गया और सोचने लगा कि 'अब क्या करें ?'

जब कोई बड़ी मुसीबत आये और अपने बलबूते से वह हटायी नहीं जा सके तो किसी-न-किसी बलवान की शरण लेनी चाहिए। सम्राट तो रजोगुणी होते हैं किंतु यह सम्राट सोचने लगा, 'उनके देश के किसी नागरिक का अपमान हुआ तो वे हमारे देश पर चढ़ाई करते हैं और अब तो हमारे देश के संत को ही उन्होंने पकड़ लिया है। मेरे देश के संत निर्दोष हैं, वे लोग भले दोष मान लें जासूसी का। अब हम क्या करें प्रभु ?...'

एक सुबह एक अनजान व्यक्ति पहुँचा विश्वजित के राजदरबार में और बोला : ''मैं पड़ोसी देश का

संदेशा लाया हूँ, कैवर्त-सम्राट तोमराज का।''

''अच्छा ! वह तो छोटा-सा राज्य है, अभी तक लोहा ले रहा है। अब क्या उसने हार मान ली ?''

''नहीं, उन्होंने हार तो नहीं मानी और वे हारेंगे भी नहीं किंतु हमारे राज्य के संत को आपने बंदी बनाया है। सम्राट तोमराज ने कहा है कि २ करोड़ स्वर्णमुद्राएँ ले लो और हमारे संत को रिहा कर दो।''

''२ करोड़ ! एक व्यक्ति के लिए २ करोड़ स्वर्णमुद्राएँ !''

''वे व्यक्ति नहीं हैं, विश्वात्मा हैं । परमात्मा से उनका मन जुड़ा हुआ है । उनकी वाणी से लोगों को शांति मिलती है । उनके दर्शन से लोग पुण्यात्मा हो जाते हैं। वे संत हैं।''

''देवलाश्वजी संत हैं ? वे तो जासूसी के गुनाह में पकड़े गये हैं और शत्रु का जासूस चाहे संत हो, हम कैसे छोड़ सकते हैं ?''

''कैवर्त-सम्राट ने प्रार्थना भेजी है कि और जो भी कुछ आप शर्त रखें, हमें कबूल है । २ करोड़ स्वर्णमुद्राएँ अगर कम लगें तो मैं अपना राज्य देने से भी चूकूँगा नहीं । हमारे देश के संत की हत्या हम बर्दाश्त नहीं करेंगे।''

विश्वजित की आँखें फटी रह गयीं : ''आखिर तो उस संत में क्या है ?''

''वे संत हैं, उनके अज्ञान का अंत हो गया है। 'मैं शरीर हूँ और जन्मता-मरता हूँ' - यह संसारी लोग मानते हैं। 'मैं आत्मा हूँ, अजन्मा हूँ' - ऐसा ज्ञान उन्हें हुआ है। ऐसे पुरुष के दर्शन से समाज का पुण्य बढ़ता है और ऐसे पुरुष हैं तो हमारा छोटा-सा राज्य भी आपके इतने बड़े चक्रवर्ती राज्य से लोहा लेने में सफल हो रहा है । संत का आशीर्वाद, मार्गदर्शन, कृपाप्रसाद... वह तो हमारे कैवर्त-सम्राट तोमराज जानते हैं।''

''क्या २ करोड़ स्वर्णमुद्राएँ दे देंगे तोमराज ?''

''हाँ।''

''उसका प्रमाण क्या है ? तुम तो आगंतुक व्यक्ति हो, मैं कैसे विश्वास करूँ ?''

उस आगंतुक ने अपना दायाँ हाथ सम्राट विश्वजित के नजदीक कर दिया। चमचमाती अँगूठी में लिखा था : 'कैवर्त-सम्राट तोमराज' ! विश्वजित कूदकर नीचे उतरा और गले लगाया : ''सम्राट तुम ! संत को रिहा कराने की भीख माँगने अपने प्राणों की बाजी लगाकर सुबह-सुबह अकेले, निहत्थे आये हो ! तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं। अब युद्ध तो क्या चलेगा, तुम मुझे अपना मित्र बना लो। जिसके रक्षक संत हैं, उसका मित्र बनने से भी हमारा कल्याण होगा।''

हजारों सैनिकों की मृत्यु का अंत हुआ, खून की धाराओं का अंत हुआ और प्रेम का प्रसाद बहने लगा।

मैं कैवर्त-सम्राट तोमराज को हजार-हजार बार धन्यवाद दूँगा। जिस कैवर्त राज्य के रखवाले संत हैं और जिस राजसत्ता को सँभालनेवाले तोमराज जैसे गुरुभक्त हैं, उस राज्य का बाल बाँका कौन कर सकता है ! उस दिन से दोनों पड़ोसी राज्य दूध-शक्कर की नाईं रहे।

ऐसा ही एक दूसरा प्रसंग भी है। ईरानियों और तुर्कियों के बीच युद्ध चालू हुआ था। वे आपस में भिड़े तो ऐसे भिड़े कि कोई निर्णायक मोड़ नहीं आ रहा था। तुर्कियों को ईरानियों से लोहा लेना बड़ा भारी पड़ रहा था। इतने में ईरान के सूफी संत फरीदुद्दीन अत्तार युद्ध की जगह से गुजरे तो तुर्कियों ने उन्हें जासूसी के शक में पकड़ लिया । अब ईरान के संत हैं तो गुस्से में द्वेषपूर्ण निर्णय किया कि इन्हें मृत्युदंड दिया जायेगा, देशद्रोही आदमी हैं । ईरान के अमीरों ने सुना तो कहला के भेजा : ''इन संत के वजन की बराबरी के हीरे-जवाहरात तोल के ले लो लेकिन हमारे देश के संत को हमारी आँखों से ओझल न करो।''

तुर्क-सुल्तान : ''हूँह... !''

फिर ईरान के शाह ने कहा : ''हीरे-जवाहरात कम लगें तो यह पूरा ईरान का राज्य ले लो लेकिन हमारे

देश के प्यारे संत को फाँसी मत दो।''

''आखिर इनमें क्या है ? देखने में तो ये एक इन्सान दिखते हैं!''

''इन्सान तो दिखते हैं लेकिन रब से मिलानेवाले ये महापुरुष हैं। ये चले गये तो अँधेर हो जायेगा। ब्रह्मज्ञानी संत का आदर मानवता का आदर है, इन्सानियत का आदर है। मनुष्य के ज्ञान का आदर है, विकास का आदर है। ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत धरती पर कभी-कभार होते हैं। मेरा ईरान का राज्य ले लो किंतु मेरे संत को रिहा कर दो।''

तुर्क-सुल्तान भी आखिर इन्सान था, बोला : ''तुमने आज मेरी आँखें खोल दीं। संतों के वेश में खुदा से मिलानेवाले इन औलिया, फकीरों का तुम आदर करते हो तो मैं तुम्हारा राज्य लेकर इनको छोड़ूँ ! नहीं, आओ हम गले लगते हैं। इन संत की कृपा से हमारा वैर मिट गया।''

भाग होया गुरु संत मिलाया।
प्रभ अविनाशी घर में पाया ॥

जितनी देर ब्रह्मज्ञानी संतों के चरणों में बैठते हैं और वचन सुनते हैं वह समय अमूल्य होता है। उसका पुण्य तौल नहीं सकते हैं।

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार।

संत के दर्शन-सत्संग से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फल फलित होने लगते हैं। उन्हीं संत से अगर हमको दीक्षा मिली तो वे हमारे सद्गुरु बन गये। तब तो उनके द्वारा हमको अनंत फल होता है, वह फल जिसका अंत न हो, नाश न हो।

सद्गुरु मिले अनंत फल,
कहत कबीर विचार ॥

पुण्य का फल सुख भोग के अंत हो जाता है, पाप का फल दुःख भोग के अंत हो जाता है पर संत के, सद्गुरु के दर्शन और सत्संग का फल न दुःख देकर अंत होता है न सुख देकर अंत होता है, वह तो अनंत से मिलाकर मुक्तात्मा बना देता है।

मंत्रशक्ति से अकाल दूर

जप, पाठ, हवन से पूर्व

हवन, जप, पाठ करते हुए

पूर्णाहुति के समय आसमान में छाये बादल

अकाल बदला सुकाल में

मार्च माह में ऐरोली (मुंबई) में आयोजित होली कार्यक्रम के दौरान मीडिया ने पूज्य बापूजी के लिए अनर्गल प्रलाप अलापा। इससे हमको बड़ा दुःख हुआ। मंत्र-विज्ञान के लिए कुछ चैनलों ने जो चुनौती दी, उसे हम सब साधकों ने स्वीकार कर लिया। सातारा जिले (महा.) में खटाव तहसील पिछले दो सालों से सूखाग्रस्त है। यहाँ भयंकर अकाल के कारण लोगों को तथा जानवरों को पीने के लिए पानी नहीं था। टैंकर से पानी आता था। पुसेगाँव के पास एक बड़ा तालाब है - 'नेर'। उसमें बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गयी थीं। यहाँ के ४००-५०० साधकों ने मिलकर पंडाल लगवाया और २४ से २६ मई तक त्रिकाल संध्या में श्री आशारामायण पाठ, गुरुमंत्र का जप, सत्संग व हवन किया।

पूज्य बापूजी की कृपा से पूर्णाहुति के समय अचानक बरसाती बादल घिर आये (देखें तस्वीरें आवरण पृष्ठ ४ पर) और बूँदा-बाँदी शुरू हो गयी। कुछ ही मिनटों में घनघोर वर्षा होने लगी। पिछले दो वर्षों से भीषण अकाल के कारण बारिश बिल्कुल नहीं हुई थी। सभी लोग खुशी से नाचते हुए बारिश में भीगने लगे। वह बारिश चली तो ऐसी चली कि रातभर मूसलधार वर्षा हुई। विक्टोरिया रानी के शासनकाल में बने यहाँ के विशाल 'नेर' तालाब की बड़ी-बड़ी दरारें भर गयीं। केवल दो दिनों में ही एक तिहाई तालाब भर गया। चार दिन तक ऐसी बरसात हुई कि हमारे क्षेत्र के बड़े-बड़े सूखे नालों में बाढ़ आ गयी। कई गाँवों के सूखे कुएँ और बावड़ियाँ पानी से भर गयीं। सभीने मंत्र-विज्ञान का प्रभाव प्रत्यक्ष देखा और कइयों ने आकर हमें धन्यवाद दिया। हमने उन सबको बताया कि धन्यवाद देने हैं तो पूज्य बापूजी को दो, जिनकी कृपा से मंत्र-विज्ञान की महिमा हम सबके सामने प्रत्यक्ष हुई है।

- तुकाराम सालुंखे, विसापुर,
जि. सातारा (महा.). मो. : ९४२१४२७९०८

नींबू अनुष्ण अर्थात् न अति उष्ण है, न अति शीत। यह उत्तम जठराग्निवर्धक, पित्त व वातशामक, रक्त, हृदय व यकृत की शुद्धि करनेवाला, कृमिनाशक तथा पेट के लिए हितकारी है। हृदयरोगों को ठीक करने में यह अंगूर से भी अधिक गुणकारी सिद्ध हुआ है। इसमें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध विटामिन 'सी' शरीर की रोगप्रतिकारक शक्ति को बढ़ाता है।

आधुनिक खानपान, मानसिक तनाव एवं प्रदूषित वातावरण से शरीर में सामान्य मात्रा से कहीं अधिक अम्ल (एसिड) उत्पन्न होता है, जिसके शरीर पर होनेवाले परिणाम अत्यंत घातक हैं। यह अतिरिक्त अम्ल कोशिकाओं को क्षति पहुँचाकर अकाल वार्धक्य व धातुक्षयजन्य रोग (degenerative diseases) उत्पन्न करता है।

नींबू स्वाद में अम्ल है परंतु पाचन के उपरांत इसका प्रभाव मधुर हो जाता है। यह माधुर्य अम्लता को आसानी से नष्ट कर देता है। एक गिलास गर्म पानी में एक नींबू व २५ तुलसी के पत्तों का रस मिला के हफ्ते में २ से ४ दिन पीने से शरीर में संचित विषाक्त द्रव्य, हानिकारक जीवाणु व अतिरिक्त चर्बी नष्ट होकर कई गम्भीर रोगों से रक्षा होती है।

डॉ. रेड्डी मेलर के अनुसार 'कुछ दिन ही नींबू का सेवन रक्त को शुद्ध करने में अत्यधिक मदद करता है। शुद्ध रक्त शरीर को खूब स्फूर्ति व मांसपेशियों को नयी ताकत देता है।'

औषधीय प्रयोग

(१) अम्लपित्त (एसिडिटी) : नींबू-पानी में मिश्री व सेंधा नमक मिला के पीने से अम्लपित्त में राहत मिलती है। रोग पुराना हो तो गुनगुने पानी में १ नींबू निचोड़कर सुबह खाली पेट कुछ दिनों तक नियमित लेना चाहिए।

(२) पेट की गड़बड़ियाँ : भोजन से पूर्व नींबू, अदरक व सेंधा नमक का उपयोग अरुचि, भूख की कमी, गैस, कब्ज, उलटी व पेटदर्द में लाभदायी है।

(३) यूरिक एसिड की वृद्धि : राजमा, उड़द, पनीर जैसे अधिक प्रोटीनयुक्त पदार्थों का अति सेवन करने से शरीर में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे जोड़ों में खासकर एड़ी में दर्द होने लगता है। सुबह खाली पेट गुनगुने पानी में नींबू का रस लेने से यह यूरिक एसिड पेशाब के द्वारा निकल जाता है। इसमें नींबू की आधी मात्रा में अदरक का रस मिलाना विशेष लाभदायी है।

(४) मुँह के रोग : नींबू मुँह में कीटाणुओं की वृद्धि को रोकता है। भोजन के बाद नींबू-पानी से कुल्ला

(शेष पृ.४० पर)

जो आदमी अपनी आवश्यकता कम रखकर अपनी बाकी आय का सदुपयोग करता है उसका हृदय जल्दी सत्पद में टिक जाता है ।

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२६ अप्रैल (शाम) से २१ मई (दोप.) तक हरिद्वार व ऋषिकेश में पूज्य बापूजी का लम्बा एकांतवास रहा । एकांतवास में योगीजन लोक-व्यवहार से दूर रहकर अपनी आत्ममस्ती में विचरण करते हैं लेकिन संतश्री एक ऐसे अविकम्प योग के सम्राट, विलक्षण आत्मयोगी लोकसंत हैं, जो एकांतवास में अपनी आत्ममस्ती में विचरण तो करते ही हैं, साथ ही इन दिनों भी कुछ समय देकर जिज्ञासुओं को सूक्ष्म आध्यात्मिक संकेत व मार्गदर्शन, भक्तों को प्रेमाभक्ति तथा साधकों को साधना की अनुपम कुंजियाँ प्रदान करके कृतार्थ करते हैं।

एकांतवास के बाद शुरू हुआ पूनम-दर्शन का सिलसिला। इस बार वैशाखी पूनम पर पूज्य बापूजी ने ४ जगहों पर दर्शन-सत्संग दिये । उन चार सौभाग्यशाली स्थलों की शृंखला में प्रथम रहा **अहमदाबाद**। २१ शाम को महाराजश्री यहाँ पधारे। **२२ व २३ मई (सुबह ९ बजे तक)** के पूनम दर्शन-सत्संग में पूज्यश्री ने जीवन को महान बनानेवाले सद्‌गुण बताये : ''जीवन में तीन सद्‌गुण होने चाहिए। एक तो अग्नि जैसा दाहक गुण हो, गंदी आदतों को जलाने का। सूर्य जैसा प्रकाशक गुण आना चाहिए कि 'ईश्वरप्राप्ति की बलि देकर कुछ भी मिल जाय तो आखिर क्या ?' तीसरा अपने जीवन में तेज भी होना चाहिए । कैसा भी प्रसंग आ जाय, आत्मतेज के प्रभाव से उसे पैरों तले कुचलकर आगे निकल जाना चाहिए।''

२३ से २४ मई सुबह ८.३० बजे तक पूनम दर्शन-सत्संग **वडोदरा**वासियों को मिला। यहाँ पूज्य बापूजी ने हड्डियों तक के रोगों को जड़ से मिटानेवाले पंचगव्य का पान सभीको करवाया । भारतीय संस्कृति की परिचायक गाय की अद्‌भुत महिमा बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''किसी व्यक्ति को कोई ऐसा रोग हो जिसके लिए डॉक्टर बोलते हैं, 'यह ठीक नहीं हो सकता' तो ऐसे व्यक्ति को गाय पालने को कह दो। वह अपने हाथ से थोड़ा चारा खिलाये और उँगलियों के आगे का भाग गाय की पीठ पर घुमाता रहे। इससे २-४ महीनों में असाध्य रोग भी मिट सकते हैं।''

वडोदरावासियों को सत्संग-दर्शन देकर पूज्य बापूजी बिना किसी विश्राम के सीधे पहुँचे **दिल्ली** के रामलीला मैदान के मंच पर। यहाँ **सुबह ११ से ३** बजे के सत्र में उमड़े लाखों भक्त बापूजी के दर्शन-सत्संग पाकर कृतार्थ हुए।

चौथा पुण्यशाली स्थल रहा **हरिद्वार** । यहाँ तो घोषित कार्यक्रम **२५ से २७ मई** तक था परंतु पूज्यश्री २४ शाम ४.३० बजे ही पधारे और २७ मई

तक 'वैशाखी पूर्णिमा व नारद जयंती' के निमित्त मोक्षदायिनी माँ गंगा के तट पर भव्य सत्संग का आयोजन हुआ । चार-चार स्थानों पर पूर्णिमा दर्शन-सत्संग देने के बावजूद भी यहाँ उमड़ी विशाल जनमेदनी ने विशाल पंडाल को भी नन्हा बना दिया । हर किसीका यही अनुभव था :

गुरुचरणों में प्रीति जगाकर तो देखो,
गुरुवर को दिल में बसाकर तो देखो ।
तुम पूरे-के-पूरे बदल जाओगे,
ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि में आकर तो देखो ।।

यहाँ पूज्यश्री के पावन करकमलों से बच्चों की उन्नति में चार चाँद लगानेवाली **'हम भारत के लाल हैं'** पुस्तक का विमोचन भी हुआ । साथ ही पूज्य बापूजी के सान्निध्य में बाल वक्ताओं को वक्तव्य देने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ । २६ मई को नारद जयंती के उपलक्ष्य में नारदजी के मधुर स्वभाव को याद करते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''मेरा हृदय नारदजी के लिए बहुत-बहुत आदर से भरा है । आप बुद्धिमान, तेज, यश और आत्मज्ञान से सम्पन्न हैं । विनय का सद्गुण तो नारदजी को देखते ही दूसरों में आ जाता है, ऐसे विनयी । और तपस्या में नारदजी अद्भुत हैं ! सबकी भलाई से नारदजी का हृदय सम्पन्न है । नारदजी अपनी प्रशंसा के चाहक नहीं, सामनेवाले के मंगल के चाहक हैं ।''

माधुर्यावतार पूज्य बापूजी के सान्निध्य में भगवान श्रीकृष्ण की मधुमय लीलाएँ प्रत्यक्ष हो जाती हैं । शास्त्रों में आता है कि भगवान श्रीकृष्ण ग्वाल-गोपियों को माखन-मिश्री खिलाकर प्रेमानंद लुटाते थे । ऐसी ही एक अद्भुत लीला के दर्शन हुए हरिद्वार आश्रम में २६ मई की रात्रि को । पूज्यश्री पंडाल में सत्संग करके जब आश्रम पहुँचे तो वहाँ श्रद्धालु भक्त करुणावत्सल पूज्य बापूजी के दीदार के लिए बैठे हुए थे । बापूजी सीधे भक्तों के बीच पधारे । वहाँ संतश्री ने पहले तो फलों आदि का प्रसाद लुटाया फिर अपने हाथों से आँवला-ग्वारपाठे का शरबत पिलाकर भक्तों को दिव्य अलौकिक सुख से निहाल कर दिया ।

२८ मई से ४ जून तक पुनः पूज्यश्री का हरिद्वार में एकांतवास रहा । ५ से ७ जून तक **नई टिहरी** में एकांत-सत्संग के बाद **८ जून** को यहाँ जाहिर सत्संग हुआ । यहाँ ब्रह्मज्ञान का अमृत-रस पिलाने के साथ पूज्य बापूजी ने कई प्रकार के आमों का भर-भर गिलास मधुर रस भी पिलवाया । अंत में कुछ रस बच गया तो आसपासवालों को बुलाकर प्रेमभरी छेड़खानी करते हुए बोले : ''तुमको मार खानी है क्या ? यह रस बाल्टी में बचा कैसे ? रस पियोगे कि मार खाओगे ?'' सभी लोग पूज्य बापूजी की इस लीला से भावविभोर हो गये । पूज्यश्री ने यहाँ लीची और अंगूर की प्रसादी भी बँटवायी । टिहरी में महँगाई की खबर मालूम होने पर पूज्यश्री ने कम दामों में सब्जियों का स्टॉल लगवाने की भी व्यवस्था करवायी । साथ ही घरों में जाकर निःशुल्क पलाश शरबत की बोतलें भी बँटवायीं ।

८ जून को (शाम ५ बजे से) आमफाटा, खाड़ी (उत्तराखंड) तथा **९ जून को** उत्तराखंड की राजधानी **देहरादून** के भक्तों को सत्संग-दर्शन का लाभ मिला । **९ जून शाम ५.३० बजे से १० जून सुबह** तक **पौंटा साहिब (हि.प्र.)** के भक्त पूज्य बापूजी द्वारा आत्मज्ञान का सत्संग-प्रसाद पाकर कृतार्थ हो गये ।

१० जून (शाम) व ११ जून को **सोलन आश्रम (हि.प्र.)** में पूज्य बापूजी के एकांतवास के बाद **१२ जून** को यहाँ जाहिर सत्संग हुआ । पिछले ६ वर्षों से हर साल यहाँ के भक्तों को पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य का दुर्लभ सुअवसर मिल रहा है । कष्ट को उन्नति का मार्ग बताते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''जो

कष्ट सहकर दूसरों का दुःख मिटाता है, जो कष्ट सहकर भगवान के रास्ते आता है, जो कष्ट सहकर भी धर्म में अडिग रहता है उसको उसी समय खुशी मनानी चाहिए कि भगवान उसे उज्ज्वल भविष्य की तरफ ले जा रहे हैं।''

१३ व १४ जून को **चंडीगढ़**वासियों को एकांतवास में पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ मिला। इसके बाद **१५ व १६ जून** को वहाँ जाहिर सत्संग देकर सभी लोगों को परितृप्त करके पूज्यश्री १७ जून की रात्रि को रजोकरी-दिल्ली आश्रम पधारे। १८ जून की शाम 'ज्ञान के अनुसार कर्म कर्मयोग हो जायेगा, ज्ञान के अनुसार विश्वास भक्तियोग हो जायेगा, आत्मज्ञान के अनुसार संबंध शाश्वत संबंध को जगा देगा।' - इस सूक्ष्म विषय पर जो सत्संग चला है, वह वीसीडी व एमपी३ तो अवश्य श्रवण-मनन करने योग्य है। १९ जून की संध्या को पूज्यवर पहुँचे **अहमदाबाद**। **२२ व २३ जून (सुबह) को** यहाँ आये पूनम व्रतधारियों को तृप्त करके पूज्यश्री ने **२३ सुबह १० बजे से २४ दोपहर** तक **दिल्ली** के पूनम व्रतधारियों को दर्शन-सत्संग का लाभ दिया। तृप्ति, संतुष्टि व परमेश्वर की प्यास जगानेवाले जोगी ने यहाँ अनूठे प्रयोग कराये। धनभागी हैं वे जो उनके रू-बरू आ के प्रयोग पाकर पुण्य, आनंद और मुक्ति की मस्ती का आस्वादन करते हैं। शिवजी ने ऐसे पुण्यात्माओं के लिए ही कहा होगा :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

****

(पृ.३७ 'शरीर स्वास्थ्य...' का शेष) करने से मुँह की दुर्गंध ठीक हो जाती है।

विटामिन 'सी' की कमी से होनेवाले स्कर्वी रोग में मसूड़ों से खून आने लगता है, दाँत हिलने लगते हैं। कुछ दिनों तक नींबू के सेवन से व एक नींबू के रस को एक कटोरी पानी में मिलाकर कुल्ले करने से इसमें लाभ होता है। नींबू का छिलका मसूड़ों पर घिसने से मसूड़ों से मवाद आना बंद हो जाता है।

(५) पेशाब की जलन : मिश्रीयुक्त नींबू-पानी उपयुक्त है।

(६) हैजा : नींबू का रस हैजे के कीटाणुओं को शीघ्रता से नष्ट करता है।

उपवास के दिन गुनगुने पानी में नींबू का रस व शहद मिला के पीने से शरीर की शुद्धि होकर स्फूर्ति आती है।

रस की मात्रा : ५ से १० मि.ली.

****

जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं वह पशु और पक्षी जैसा है । जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं उसका विकास भी नहीं है । जिसके अंतःकरण में श्रद्धा नहीं उसके जीवन में रस भी नहीं है । श्रद्धा ऐसा अनुपम सद्गुण है कि जिसके हृदय में वह रहता है उसका चित्त श्रद्धेय के सद्गुणों को पा लेता है ।

श्रद्धा सम्बल-सहारा भी है और बल भी है । निर्बल का बल और आश्रय श्रद्धा ही है । अति अहंकारी व्यक्ति श्रद्धा नहीं कर सकता । निर्बल मनवाला मान्यता और कल्पना के संस्कारों को पकड़ रखता है इसलिए उसकी कल्पना के संस्कारों को पकड़ रखता है इसलिए उसकी श्रद्धा टिकती नहीं है । वह घटती-बढ़ती रहती है । परमात्मा में, परमात्म-प्राप्त महापुरुषों में शास्त्रों में श्रद्धा होनी चाहिए । अपने आप पर भी उतनी श्रद्धा होनी चाहिए । जितनी श्रद्धा डगमग होती है उतना ही व्यक्ति का व्यवहार और परमार्थ दोनों में डगमग रहता है । जीवन में अडिग श्रद्धा की आवश्यकता है । जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं वह तो कौए से भी बदतर है । कौए का किसी पर भी विश्वास नहीं होता ।

संत श्री आशारामजी गुरुकुल के बढ़ते कदम

संत श्री आशारामजी गुरुकुल भारतीय संस्कृति के योग व अध्यात्म की प्रयोगशाला है। पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन में संचालित इन गुरुकुलों में आध्यात्मिक उन्नति और उच्च संस्कार-सिंचन तो होता ही है, साथ-ही-साथ ऐहिक शिक्षा जगत की उच्चतम ऊँचाइयाँ पाना भी विद्यार्थियों के लिए सुगम हो जाता है। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी बोर्ड की परीक्षाओं में गुरुकुल के विद्यार्थियों ने उत्तम सफलता प्राप्त कर सिद्ध कर दिया है कि आनेवाले समय में पूज्य बापूजी के बच्चे भारत को पुनः विश्वगुरु की अपनी गरिमा अवश्य प्राप्त करायेंगे।

वर्ष २०१२-१३ के परीक्षा परिणामों की झलकें

कक्षा १०वीं बोर्ड की परीक्षा में आगरा, अहमदाबाद, जयपुर, भोपाल, इंदौर, छिंदवाड़ा, राजकोट एवं सरकी लीमड़ी (आदिवासी क्षेत्र) के गुरुकुलों में १००% विद्यार्थी उत्तीर्ण। CBSE बोर्ड में जयपुर गुरुकुल के ९०% एवं आगरा गुरुकुल के ८१% विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में।

मोहित कुमार
आगरा, CGPA १०

विवेक कुमार
जयपुर, CGPA १०

सिद्धार्थ पांडेय
आगरा, CGPA ९.८

साजन कुमार
जयपुर, CGPA ९.८

ट्विंकल सिसोदिया
आगरा, CGPA ९.८

मयंक सिकरवार
आगरा, १२वीं ९४%

हिमानी चौधरी
आगरा, १२वीं ९२%

प्रभात गुप्ता
आगरा, CGPA ९.४

दिनेश कुमार
आगरा, CGPA ९.२

समर्थ धीर
आगरा, CGPA ९.२

गुजरात बोर्ड : अहमदाबाद गुरुकुल में १०वीं एवं १२वीं का १००% परिणाम तथा १०वीं में ९५% विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में। राजकोट गुरुकुल तथा सरकी लीमड़ी गुरुकुल (आदिवासी क्षेत्र) में भी कक्षा १०वीं का १००% परिणाम।

हर्ष वैष्णव
अहमदाबाद, P.R. ९९.०५

कोचरा उदयसिंह
सरकी लीमड़ी, P.R. ९८.८

धर्मराज राठोड
अहमदाबाद, P.R. ९८.२१

ऋषिप्रसाद देवरे
अहमदाबाद, P.R. ९८.२१

भौतिक सवालिया
राजकोट, P.R. ९७.२८

(P.R. = Percentile Rank)

मध्य प्रदेश बोर्ड : छिंदवाड़ा गुरुकुल की १०वीं की परीक्षा का १००% परिणाम तथा ८६.२५% विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण एवं गणित विषय में ४ विद्यार्थियों के १००/१०० तथा ५ विद्यार्थियों के ९९/१०० अंक।

निधि सुलेखिया, १०वीं ९२%, गणित १००/१००
गुंजन फुलवाला, १०वीं ९१%, गणित १००/१००
अम्बर नलिन, १०वीं ९०%, गणित १००/१००
कृष्णा पाटीदार, १०वीं ८९%, गणित १००/१००
एकता उपाध्याय, १०वीं ९०%, गणित ९९/१००
जयश्री पटेल, १०वीं ८७%, गणित ९९/१००
पूजा गुप्ता, १०वीं ८५%, गणित ९९/१००
देवांशी धरे, १०वीं ८६%, गणित ९९/१००
मेहुल गुन्डारिया, १०वीं ८३%, गणित ९९/१००
महिमा तोमर, १२वीं ८९%, विज्ञान संकाय

विशेष सूचना : गुरुकुलों में अध्यापन हेतु (गणित, विज्ञान, वाणिज्य, अंग्रेजी के P.G.T. & T.G.T.) मंत्रदीक्षित शिक्षक अपना विस्तृत विवरण (Biodata) फोटोसहित निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा फैक्स या ई-मेल करें : गुरुकुल केन्द्रीय प्रबंधन समिति, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद-५
फोन : (०७९) ३९८७७७८७-८८ फैक्स : (०७९) २७५०५०१२ ई-मेल : gurukul@ashram.org www.gurukul.ashram.org

वैशाखी पूर्णिमा पर पूज्य बापूजी के
दर्शन के लिए उमड़े असंख्य भक्त
RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd. valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2013
नई दिल्ली
हरिद्वार
बड़ौदा
मंत्रशक्ति से अकाल दूर
(पढ़ें पृष्ठ ३१)
जप, पाठ, हवन से पूर्व
हवन, जप, पाठ करते हुए
पूर्णाहुति के समय आसमान में छाये बादल
अकाल बदला सुकाल में
दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता-२०१३ शुरू हो रही है, समितियाँ व साधक
अपने-अपने क्षेत्र में प्रतियोगिता के आयोजन का दैवी सेवाकार्य शुरू कर सकते हैं।
आ रही हैं नये-नये साहित्यों की सौगात
प्रतियोगिता की मार्गदर्शिका एवं अधिक जानकारी
हेतु सम्पर्क करें : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद
दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९-५०-५१-८८